हँसती दुनिया








नवम्बर–दिसम्बर 2000

6/-



वर्ष 27
अंक 11

हँसती दुनिया

(बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका)

नवम्बर
2000

कहानियां

भीष्म ने समझाया	शिखा जोशी	11
ईर्ष्या	भाषणा बांसल	19
लाल चिड़िया	अमर सिंह शौल	29
शिकारी की प्रतिज्ञा	ईलू रानी	33
सच होते सपने	डॉ. शीतांशु भारद्वाज	62
अनोखा सपना	सिमरन	73
मन के भाव	ईलू रानी	79
घर का पता	प्रेम नाथ लखनपाल	83
ऐसा भी होता है	डॉ. हूंदराज बलवाणी	85
वास्तविक कौन?	चन्दरभान निरंकारी	103
लालच का फल	राजकुमार जैन 'राजन'	193
हम एक हैं	जाकिर अली 'रजनीश'	107

कविताएं

नंदन वन का मेला	डॉ रामदुलार सिंह	17
डमरू बाजे सब नाचे	सतीश चन्द्र	25
शेर की शादी	राजकुमार	37
बन्दर की दुकान	राजकुमार जैन	47
तीन बाल कविताएं	अजय बेजोड़	53
माँ	ओ. पी. राजकुमार	69
हिमालय	फिगार बुलन्दशहरी	72
धरती	डॉ पी. आर. शुक्ल	111
बन जाओ ध्रुव तारा	डॉ दयानाथ	119

लेख

पैंसिल की कहानी	ओम मिश्रा	22
हमारे सन्त	श्रीराम प्रजापति	54
अफ्रीका की भयानक चींटी	किशोर डेनियल	59

स्तम्भ

सबसे पहले	7
समाचार	70
भैया से पूछो	76
रंग भरो परिणाम	80
डॉ. अंकल के उत्तर	112
कभी न भूलो	113
पढ़ो और हँसो	115
आपके पत्र मिले	122

चित्रकथाएं

पूसी	40
मास्टर जी	92

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री जे. आर. डी. 'सत्यार्थी' ने सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 में मुद्रित करवाया।
कार्यालय फोन : 7430181

सम्पादक (अवैतनिक) विनय जोशी
सहायक सम्पादक विमलेश आहूजा
कला निर्देशक दीपक बग्गा

वार्षिक चन्दा : 30 /- रु. जीवन-पर्यन्त : 300/- रु. एक प्रति : 6/- रु.
इंग्लैण्ड £ 7, अमेरिका $ 12 इंग्लैण्ड £ 100, अमेरिका $ 150
कनाडा $ 15 $ 200

सबसे पहले

राजू की उम्र 16 वर्ष थी। वह दिखने में दुबला-पतला सा ही था। उसकी माँ से लोग कहते—मौसी, क्या तुम राजू को खाने-पीने को नहीं देती हो; यह इतना दुबला-पतला क्यों दिखाई देता है?

राजू की माँ कहती—अरे, देखो तो सही! इसे खाने की कोई कमी थोड़े ही है। एक बार में चार-पांच रोटियाँ तो खा ही जाता है। और दिन में तीन या कभी-कभी तो चार बार भी खाना खाता है। फिर भी न जाने क्यों यह यूँ ही दिखता है। और देखो वो ... उधर... रामू को; उसकी माँ कहती है कि यह दो रोटियों से अधिक एक बार में नहीं खाता—वह कहती है—पूरे दिन में मेरा बेटा, तीन बार ही खाना खाता है। परन्तु उसकी सेहत देखकर तो ऐसा नहीं लगता न! शायद भगवान ने उसे अच्छी सेहत का आशीर्वाद दिया है और मेरे बेटे को नहीं दिया।

उधर नीति की माँ भी आ गई। वह भी अपनी बिटिया की बात बताने लगी—अरी बहन, मेरी बेटी पता नहीं कब पढ़ती है परन्तु हर कक्षा में व हर परीक्षा में सफल अवश्य होती है और वो इच्छा को देखो—पूरा दिन पढ़ती रहती है। जब देखो सामने किताबें कापियाँ होती हैं। उसे तो खाने-पीने तक की फुर्सत नहीं मिलती। परन्तु फिर भी हर क्लास में वह बस उत्तीर्ण भर ही हो पाती है। समझ में नहीं आता ये बच्चों की पढ़ाई का तरीका ही है या भगवान ने किसी को कम या किसी को अधिक आशीर्वाद दिया होता है।

ऐसे ही एक लड़का गोलू था। वह हर रोज पहले मन्दिर में जाता फिर गुरुद्वारे व मस्जिद में भी। इसके अलावा भी वह जहाँ कहीं सत्संग का आयोजन होता तो वहाँ चला ही जाता। परन्तु फिर भी जो भी उससे मिलता कभी उससे प्रसन्न नहीं हो पाता था। बल्कि उसे सामने आता देखकर हर कोई अपना रास्ता बदल लेता।

दूसरी ओर उसका छोटा भाई यद्यपि दिन में एक बार ही सत्संग करता था परन्तु फिर भी 'भगत' जी के नाम से ही जाना जाता था।

प्यारे साथियो! उपरोक्त तीनों बातों में एक समानता है; खाना बहुत अधिक खा लेने से सेहत नहीं बनती बल्कि जो खाया जाये उसे अच्छी तरह चबा लिया जाये ताकि मुँह में ही बनने वाले रस उस भोजन में मिल सकें फिर निगलने में आसानी हो जाती है। भोजन पचाने वाले हर अंग को कार्य में अतिरिक्त शक्ति खर्च नहीं करनी पड़ती। इस प्रकार पूरा सिस्टम (प्रणाली) आराम से कार्य करता है। इस प्रकार खाये हुए पदार्थ का पूरा भाग पच जाता है इसीलिये सेहत ठीक रहती है, जबकि अधिक खाने से परन्तु पचा न पाने के कारण शरीर को आवश्यकता से अधिक काम करना पड़ता है जिससे सेहत का खराब हो जाना स्वाभाविक है।

इसी प्रकार बहुत अधिक पुस्तकें पढ़ते रहने के स्थान पर थोड़ी पुस्तकें पढ़कर उसका चिन्तन-मनन व फिर मन्थन कर लें तो ज्ञान जाग्रत होता है। मन एकाग्र हो जाता है व हर परीक्षा में अव्वल आना स्वाभाविक हो जाता है।

एक साथ बहुत-सी पुस्तकों को पढ़ लेने की तरह ही बहुत सारे धार्मिक स्थानों पर पूरे दिन भागते रहें; परन्तु व्यवहार में भक्ति वाली कोई बात भी दिखाई न दे तो कोई लाभ नहीं। व्यवहारिक दृष्टि से हम दयाभाव, मृदु-भाषा, परोपकारिता व सहज मुस्कान लिये रहें तो इसका अर्थ होता है कि प्रभु का वास मन में बना हुआ है। ऐसे भाव सन्त समागमों से मन में जागते हैं। सन्तों के एकत्र होकर परमात्मा का सामूहिक उद्घोष ऊर्जा को मन में स्थापित कर देता है तो शरीर भी शक्ति सम्पन्न हो जाता है।

आओ, सन्त समागम में आकर मन में ऊर्जा को जगायें।

अन्त में दादा जी के 'ब्रह्मलीन' होने के उपरान्त हँसती दुनिया कार्यालय में आये हजारों सांत्वना पत्रों के लिये धन्यवाद। मुझे खुशी हुई कि मेरा परिवार कितना विशाल है व कितना प्यारा है।

भगवान करे, यह प्यार भरा विश्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही रहे।

— विनय जोशी

भीष्म ने समझाया

महाभारत के युद्ध के उपरान्त युधिष्ठिर ने तीरों की शैय्या पर लेटे भीष्म से कुछ उपदेश लिये। एक प्रश्न के उत्तर में भीष्म जी ने कहा—युधिष्ठिर! ध्यान से सुनो—एक बाघ और एक सियार थे। सियार को अपने पूर्व जन्म का भी स्मरण बना रहा, इसलिये उसे पिछले जन्म के कर्मों को याद कर उसे बहुत खेद और वैराग्य हुआ। अब उसने जीवों की हिंसा करनी छोड़ दी।



सियार का इस तरह पवित्र आचार-विचार से रहना उसके जाति-भाइयों को अच्छा न लगा। इसलिये उन्होंने कहा—भाई सियार! तू मांसाहारी जीव है और श्मशान भूमि में रहता है, फिर भी पवित्र आचार-विचार से रहना चाहता है, यह तेरी उल्टी समझ का परिणाम है। भैया! हमारे ही समान होकर रह, तेरे लिये भोजन हम लोग ला दिया करेंगे, तू सिर्फ यह अड़ंगा छोड़कर चुपचाप खा लिया करना। तेरी जाति का जो सदा से भोजन रहा है वही तेरा भी होना चाहिए।

उनकी ऐसी बात सुनकर सियार सावधान हो गया और मीठे तथा युक्तियुक्त वचनों से उन्हें समझाता हुआ बोला—बन्धुओ! अपने बुरे व्यवहारों के ही कारण हमारी जाति पर कोई विश्वास नहीं करता। अच्छे स्वभाव और आचरण से ही कुल की प्रतिष्ठा

कथा महाभारत से : श्रीमती शिखा जोशी

होती है, अतः मैं भी वही कर्म करना चाहता हूँ। जिससे अपने वंश का यश बढ़े।

सियार के इस आचार-विचार की चर्चा चारों ओर फैल गयी। तदनन्दतर एक व्याघ्र ने स्वयं आकर उसका विशेष सम्मान किया और उसे अपना मंत्रित्व स्वीकार करने के लिये उससे प्रार्थना की।

व्याघ्र बोला—सौम्य! मैं तुम्हारे स्वरूप से परिचित हूँ। तुम मेरे साथ चलकर रहो और मनमाने भोग भोगो।

सियार ने कहा—मृगराज! आपने मेरे लिये जो बात कही है, वह सर्वथा आपके योग्य है। आपको चाहिये कि जिनका आपके प्रति अनुराग हो, जिन्हें नीति का ज्ञान हो, जो संधि करने में कुशल, विजयाभिलाषी, लोभ रहित, बुद्धिमान, हितैषी तथा उदार हृदय वाले हों, ऐसे व्यक्तियों को सहायक बनाकर पिता और गुरू के समान उनका आदर करें। आप मेरे लिये जो सुविधाएँ दे रहे है उनकी मुझे इच्छा नही है। आपके पुराने नौकरों के साथ मेरा स्वभाव भी नहीं मिलेगा। वे दुष्ट प्रकृति के जीव है। आपको मेरे विरुद्ध भड़काया करेंगे। उनका प्रताप बढ़ा हुआ है। अतः उनको मेरे अधीन होकर रहना अच्छा नही लगेगा। मैं स्वयं ही कृतार्थ भी हूँ और प्रत्येक कार्य सफलता के साथ कर सकता हूँ। मेरे जैसे वनवासियों का जीवन आसक्ति रहित और निर्भय होता है। एक जगह बेखटके पानी मिलता हो और दूसरी जगह भय देने वाला स्वादिष्ट अन्न प्राप्त होता हो, इन दोनों में मुझे वहाँ ही सुख जान पड़ता है, जहाँ कोई भय नही है। राजा के पास रहने में सदा भय ही भय है। राजसेवकों में से जितने लोग दूसरों के लगाये हुए झूठे कलंक के कारण राजा के हाथ से मारे गये हैं, उनके सच्चे अपराधों के कारण नहीं। मृगराज! यदि मुझसे मंत्रित्व का कार्य लेना ही हो तो मैं आपसे एक शर्त कराना चाहता हूँ। "मेरे आत्मीय व्यक्तियों का आप सम्मान करें, उनकी हितकारिणी बातें सुनें। मैं आपके दूसरे मंत्रियों के साथ कभी परामर्श नहीं करूँगा। एकान्त में सिर्फ आपके साथ अकेला ही मिलूँगा और आपके हित की बातें बताया करूँगा। आप भी अपने जाति-भाइयों के कार्यों में मुझ से हिताहित की बात न पूछियेगा। मुझसे सलाह करने के बाद यदि आपके पहले के मंत्रियों की भूल भी साबित हो तो उन्हें प्राणदण्ड न दीजियेगा तथा कभी क्रोध में आकर मेरे आत्मीयजनों पर भी प्रहार न कीजियेगा।

'ऐसा ही होगा' कहकर शेर ने सियार का बहुत आदर किया। सियार ने भी उसका मन्त्री होना स्वीकार कर लिया। अब प्रत्येक कार्य में उसकी प्रशंसा होने लगी। यह सब देख सुनकर पहले के सेवक और मन्त्री जल भुन गये। सब उसके साथ द्वेष करने लगे। इसलिये वे झुंड बाँधकर बारम्बार सियार के पास आते और अपनी मित्रता जताते हुए उसको समझा बुझाकर अपने ही समान दोषी बनाने की कोशिश करते थे। दूसरों की वस्तु छीनकर स्वयं उसका उपभोग करते थे। किन्तु अब उनकी दाल नहीं गलती थी, वे किसी का भी धन लेने में असमर्थ थे, क्योंकि सियार ने उन पर बड़ी कड़ी पाबन्दी लगा रखी थी। वे चाहते थे सियार को मजा चखाया जाय, इसलिये तरह-तरह की बातों में उसे फुसलाते और बहुत-सा धन देने का लोभ दिखाते थे।

मगर सियार बड़ा बुद्धिमान था। वह उनके चकमे में नहीं आया। उसने धैर्य नहीं छोड़ा। तब उन नौकरों ने उसका नाश करने की शपथ खायी और सब मिलकर इसके लिये प्रयत्न करने लगे। एक दिन उन्होंने शेर के खाने के लिये जो मांस तैयार करके रखा गया था, उसे उसके स्थान से चुरा लिया और सियार की माँद में ले जाकर रख दिया। सियार ने मन्त्री पद पर आते समय शेर से पहले ही ठहरा लिया था कि "राजन्! यदि तुम मुझ से मित्रता चाहते हो तो किसी के बहकावे में आकर मेरा विनाश न करना।"

उधर शेर को जब भूख लगी और वह भोजन के लिये उठा तो उसके खाने के लिये रखा हुआ माँस नहीं दिखायी पड़ा। शेर ने चोर का पता लगाने के लिये नौकरों को आज्ञा दी। तब जिनकी यह करतूत थी, उन्हीं लोगों ने शेर से उस मांस के बारे में बताया— महाराज! अपने को बड़ा बुद्धिमान और पण्डित मानने वाले सियार महोदय ने ही आपके मांस का अपहरण किया है।" सियार की यह चपलता सुनकर शेर गुस्से से भर गया और उसको मार डालने का विचार करने लगा। उस समय सियार के प्रतिकूल कुछ कहने का मौका देखकर पहले के मन्त्री लोग शेर से कहने लगे—राजन्! वह तो बातों से ही धर्मात्मा बना हुआ है, स्वभाव का बड़ा कुटिल है। भीतर का पापी है, मगर ऊपर से धर्म का ढोंग बनाये हुए है। उसका सारा आचार-विचार दिखावे के लिये है। यह कहकर वे क्षणभर में ही उस मांस को सियार की माँद से उठा ले आये। शेर ने उनकी बातें सुनी और उसने महामन्त्री सियार को मार डालने की आज्ञा दें दी।

शेर की यह बाद ज़ब उसकी माता को मालूम हुई तो वह हितकारी वचनों से उसे समझाने के लिये आयी और कहने लगीं—बेटा! इसमें कुछ षड्यन्त्र जान पड़ता है। तुम्हें इन पर विश्वास नहीं करना चाहिये। काम में लागडाट हो जाने से जिनके मन में पाप होता है वे निर्दोष को ही दोषी बनाते हैं। किसी को अपने से ऊँची अवस्था में देखकर अक्सर लोगों को ईर्ष्या हो जाया करती है, वे उसकी उन्नति नहीं सह सकते। कोई कितना ही शुद्ध क्यों न हो, उस पर भी दोष लगा ही देते हैं। लोभी शुद्ध स्वभाव वाले व्यक्तियों और आलसी तपस्वियों से द्वेष करते हैं। इसी प्रकार मूर्ख लोग पण्डितों से, दरिद्र धनियों से, पापी धर्मात्माओं से और कुरूप रूपवानों से डाह रखते हैं। विद्वानों में भी कितने ही ऐसे अविवेकी, लोभी और कपटी होते हैं, जो बृहस्पति के समान बुद्धि रखने वाले निर्दोष व्यक्ति में भी दोष निकाला करते हैं। एक ओर तो जब घर में सुनसान था, उस समय तुम्हारे मांस की चोरी हुई है, दूसरी और एक व्यक्ति ऐसा है, जो देने पर भी मांस नहीं लेना चाहता। इन दोनों बातों पर अच्छी तरह विचार करो। संसार में बहुत से असभ्य प्राणी सभ्य की तरह और सभ्य असभ्य की तरह देखे जाते हैं। अतः उनकी परीक्षा कर लेनी उचित है। इसलिये सामने दिखायी देती हुई वस्तु की भी जाँच करनी चाहिये। जो जाँचने-बूझने के बाद किसी विषय में अपना विचार प्रकट करता है, उसे पीछे पछतावा नहीं होता। राजा के लिये किसी को मरवा डालना कठिन काम नहीं है। शक्तिशाली पुरूष में यदि क्षमा हो तो उसी की प्रशंसा की जाती है, उसी से उसका यश बढ़ता है। बेटा! सोचो, तुमने स्वयं ही सियार को मन्त्री के आसन पर बिठाया है और तुम्हारे सामन्तों में भी इसकी ख्याति बढ़ गयी है। ऐसा सुपात्र मन्त्री बड़ी मुश्किल से मिलता है। यह तुम्हारा बड़ा हितैषी है; इसलिये तुम्हें इसकी रक्षा करनी चाहिये। जो दूसरों के मिथ्या कलंक लगाने पर निर्दोष को भीं अपराधी मानकर दण्ड देता है वह राजा दुष्ट मन्त्रियों के साथ रहने के कारण शीघ्र ही मौत के मुख में पड़ता है।

शेर की माता इस प्रकार उपदेश दे ही रही थी कि उस शत्रु समूह के भीतर से एक धर्मात्मा व्यक्ति उठकर शेर के पास आया। वह सियार का जासूस था। उसने जिस प्रकार यह कपट लीला की गयी थी, उसका भंडा फोड़ दिया। इससे शेर को सियार

की सच्चरित्रता का पता चल गया और उसने मन्त्री का सत्कार करके उसको इस अभियोग से मुक्त कर दिया तथा अत्यन्त स्नेह के साथ उसे बारम्बार गले से लगाया।

सियार नीतिशास्त्र का ज्ञाता था। उसने शेर की आज्ञा लेकर उपवास करके प्राण त्याग देने का विचार किया। शेर ने उसे इस कार्य से रोका और उसका भली भाँति आदर-सत्कार किया। उस समय स्नेह के कारण उसका चित्त विकल हो रहा था। मालिक की यह अवस्था देख सियार का भी गला भर गया और वह उसके प्रणाम करके गद्‌गद् कण्ठ से बोला— 'राजन! पहले तो आपने मुझे सम्मान दिया और पीछे अपमानित कर दिया। शत्रु की सी स्थिति में पहुँचा दिया। अब मैं आपके पास रहने के योग्य नहीं हूँ। जो अपने पद से हटाये गये हों, सम्मानित स्थान से नीचे गिरा दिये गये हों, जिनका सर्वस्व छीन लिया गया हो, जो दुर्बल, लोभी, क्रोधी और डरपोक हों, जिन्हें धोखे में डाला गया हो, जिनका धन लूटा गया हो तथा जिन्हें क्लेश दिया गया हो, ऐसे सेवक शत्रुओं का काम सिद्ध करते हैं। आपने परीक्षा लेकर योग्य समझकर मुझे मन्त्री के आसन पर बिठाया था और फिर अपनी की हुई प्रतिज्ञा को तोड़कर मेरा अपमान किया है। ऐसी दशा में अब आपका मुझ पर विश्वास नहीं रहेगा और मैं भी आप पर विश्वास न होने से उद्वेग में पड़ा रहूँगा। आप मुझ पर संदेह करेंगे और मैं सदा आपसे डरता रहूँगा। इधर दूसरों के दोष ढूँढ़ने वाले आपके लोग मौजूद ही हैं, उनका मुझसे तनिक भी स्नेह नहीं है तथा इन्हें संतुष्ट रखना भी मेरे लिये बहुत कठिन है। प्रेम का बन्धन जब एक बार टूट जाता है तो उसका जुड़ना मुश्किल हो जाता है और जो जुड़ा हुआ होता है वह बड़ी कठिनाई से टूटता है। किन्तु जो बारम्बर टूटता और जुड़ता रहता है, उसमें स्नेह नहीं होता। राजाओं का चित्त चंचल होता है, उनके लिये सुयोग्य व्यक्ति को पहचानना बहुत कठिन है। सैकड़ों में कोई एक ही ऐसा मिलता है, जो सब तरह से समर्थ हो और किसी पर संदेह न करता हो।

इस प्रकार धर्म, अर्थ, काम तथा युक्तियों से युक्त सान्तवनापूर्ण वचन कहकर सियार ने शेर को प्रसन्न किया और फिर स्वयं वन में चला गया। वह बड़ा बुद्धिमान था, इसलिये शेर की अनुनय-विनय न मानकर मृत्यु पर्यन्त निराहार रहने का व्रत ले एक स्थान पर बैठ गया अन्त में शरीर त्याग दिया।

कविता : डॉ. रामदुलार सिंह 'पराया'

नंदन वन का मेला



सदियों की है बात पुरानी
था नंदन वन का मेला,
दुनिया के सब वन्य प्राणी का
था बड़ा अनोखा रेला।



झील किनारे सारस के घर
सब डाले थे डेरा,
हिरण चौकड़ी भरता हर पल
लगा रहा था फेरा।

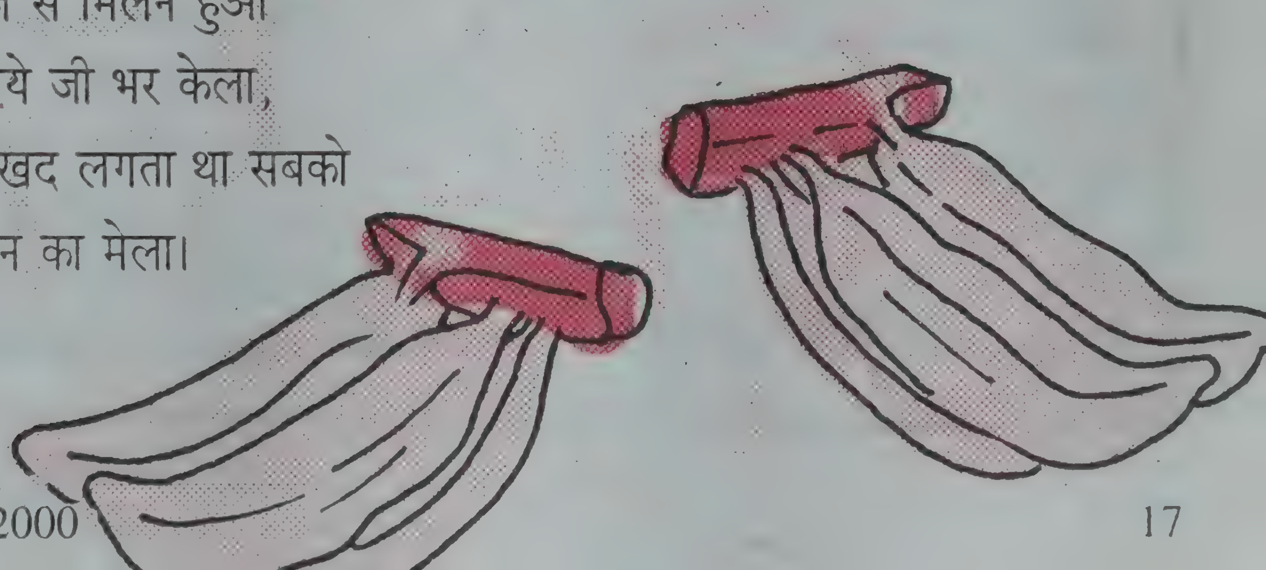


अजगर, कछुआ, लोमड़ हाथी
स्वागत में सब लीन रहे,
सारंगी चिड़िया की मीठी
तानों में लवलीन रहे।



अफ्रीका से घड़ियाल, गुरिल्ला
जेब्रा, जिराफ भी आये थे,
वीवर, भूरा भालू भी संग
उत्तरी ध्रुव से लाये थे।

इक दूजे से मिलन हुआ
सब खाये जी भर केला,
बड़ा सुखद लगता था सबको
नंदन वन का मेला।

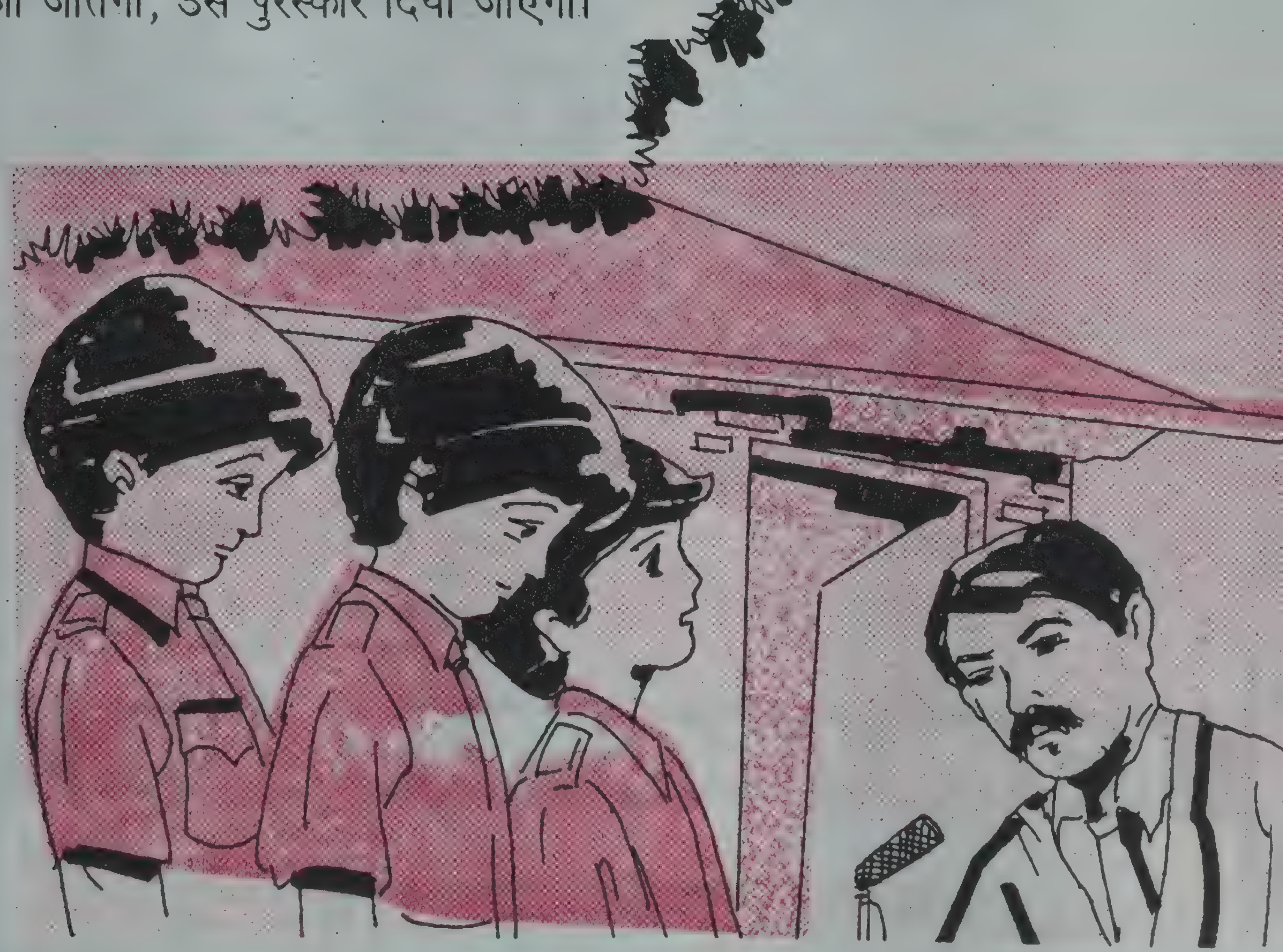


ईर्ष्या

हेमन्त व गौरव दो गहरे दोस्त थे। वे दोनों पांचवीं कक्षा में पढ़ते थे। दोनों पढ़ाई में होशियार होने के साथ-साथ क्रिकेट के भी अच्छे खिलाड़ी थे। गौरव स्वभाव से घमंडी व ईर्ष्यालु था जबकि हेमन्त का स्वभाव अत्यन्त मिलनसार व दयालु था। जिस कारण सभी लोग उसे प्यार करते थे।

छमाही परीक्षा में हेमन्त ने सबसे अधिक अंक प्राप्त किए जबकि गौरव पास ही हुआ था। वह हेमन्त से भी ईर्ष्या करने लगा। चूँकि अब उनकी बोर्ड की परीक्षा थी, इसलिए हेमन्त और भी अधिक मेहनत व लगन से पढ़ने लगा। लेकिन गौरव उससे ईर्ष्या करता रहता। इस कारण वह परीक्षा की तैयारी ठीक ढंग से नहीं कर पाया व फेल हो गया। जबकि हेमन्त जिले भर में प्रथम रहा।

एक दिन स्कूल के मुख्याध्यापक ने घोषणा की कि पाँचवीं कक्षा से लेकर दसवीं कक्षा तक क्रिकेट प्रतियोगिता होगी। पाँचवीं कक्षा के छात्र छठी कक्षा के छात्रों से खेलेंगे। जो जीतेगा, उसे पुरस्कार दिया जाएगा।




ROYAL®
X-L-N-T
BISCUITS
Full of Strength
A Choice of
Winners
ROYAL
Milk &
Glucose
Biscuits
X-L-N-T
ROYAL®
ROYAL BISCUITS PVT. LTD.
34, Sector-1, Parwanoo (H.P.) 173 220

इस घोषणा को सुनकर सभी के मन में खुशी की लहर दौड़ गई। मगर गौरव तो कुछ और ही योजना बना रहा था।

निश्चित दिन को खेल शुरू हो गया। पहली बार बैटिंग गौरव की टीम की रही। जब बैटिंग हेमन्त की टीम की आई तो शुरू में हेमन्त बैटिंग करने लगा। पहला ओवर गौरव का था। इसलिए पहली ही बाल में उसने हेमन्त के सिर का निशाना लिया और गेंद फैंक दी। निशाना अचूक था। परिणाम यह हुआ कि हेमन्त अस्पताल के बिस्तर पर जा पहुँचा। उसे ठीक होने में काफी दिन लग गए।



उसे गौरव के ईर्ष्यालु स्वभाव का पता था लेकिन उसे उससे ऐसी हरकत की उम्मीद कतई नहीं थी। उसने किसी को नहीं बताया कि गौरव ने जान-बूझकर ऐसी हरकत की थी।

अब हेमन्त काफी अच्छा हो गया व स्कूल जाने लगा। दिन बीतते गए। गौरव ने अब उसके साथ बोलना भी बंद कर दिया था।

एक दिन हेमन्त व उसकी बहन अपने घर के आगे खेल रहे थे। अचानक थोड़ी दूर बहती नदी से बचाओ-बचाओ की आवाज आई। हेमन्त इस आवाज को लाखों में भी पहचान सकता था। आवाज उसके गहरे एवं ईर्ष्यालु दोस्त गौरव की थी। वह सब कुछ भूलकर उधर दौड़ पड़ा।



वहाँ का दृश्य देखकर उसका हृदय काँप उठा। गौरव एक मगरमच्छ के जबाड़े में फँसा चिल्ला रहा था। हेमन्त ने साहस का परिचय दिया। वह भागकर घर से छुरा उठा लाया और मगरमच्छ पर छलांग लगा दी। उसने छुरे से वार करके मगरमच्छ का भेजा उड़ा दिया चूँकि वह तैरना जानता था। इसलिए जल्दी से जख्मी व बेहोश गौरव को बाहर निकाल कर अस्पताल में पहुँचाया।

बड़ी मुश्किल से डाक्टर गौरव को होश में ला सके। होश आने पर गौरव ने अपने सामने हेमन्त को रोते हुए पाया। उसके मम्मी-पापा भी अस्पताल पहुंच चुके थे। उन्होंने जब गौरव को बताया कि हेमन्त ने क़ैसे उसे अपनी जान पर खेलकर बचाया है तो उसकी आँखों से पश्चाताप के आँसू बहने लगे व हेमन्त से कहने लगा, मुझे माफ कर दो दोस्त। मैंने तो तुम्हें जान से मारना चाहा था लेकिन आज तुमने मुझे अपनी जान पर खेलकर बचाया है। उसने रोते-रोते मम्मी-पापा को सारी बात बता दी।

वह मन ही मन सोच रहा था कि अब वह किसी से ईर्ष्या नहीं करेगा। ईर्ष्या के कारण ही वह हेमन्त जैसे प्रिय दोस्त से दूर हो गया था। ●

– दादाजी, नौजवानों को व्यवहारिक सन्देश दें–

नवयुवकों की एक सभा में एक नौजवान ने खड़े होकर पूछा।

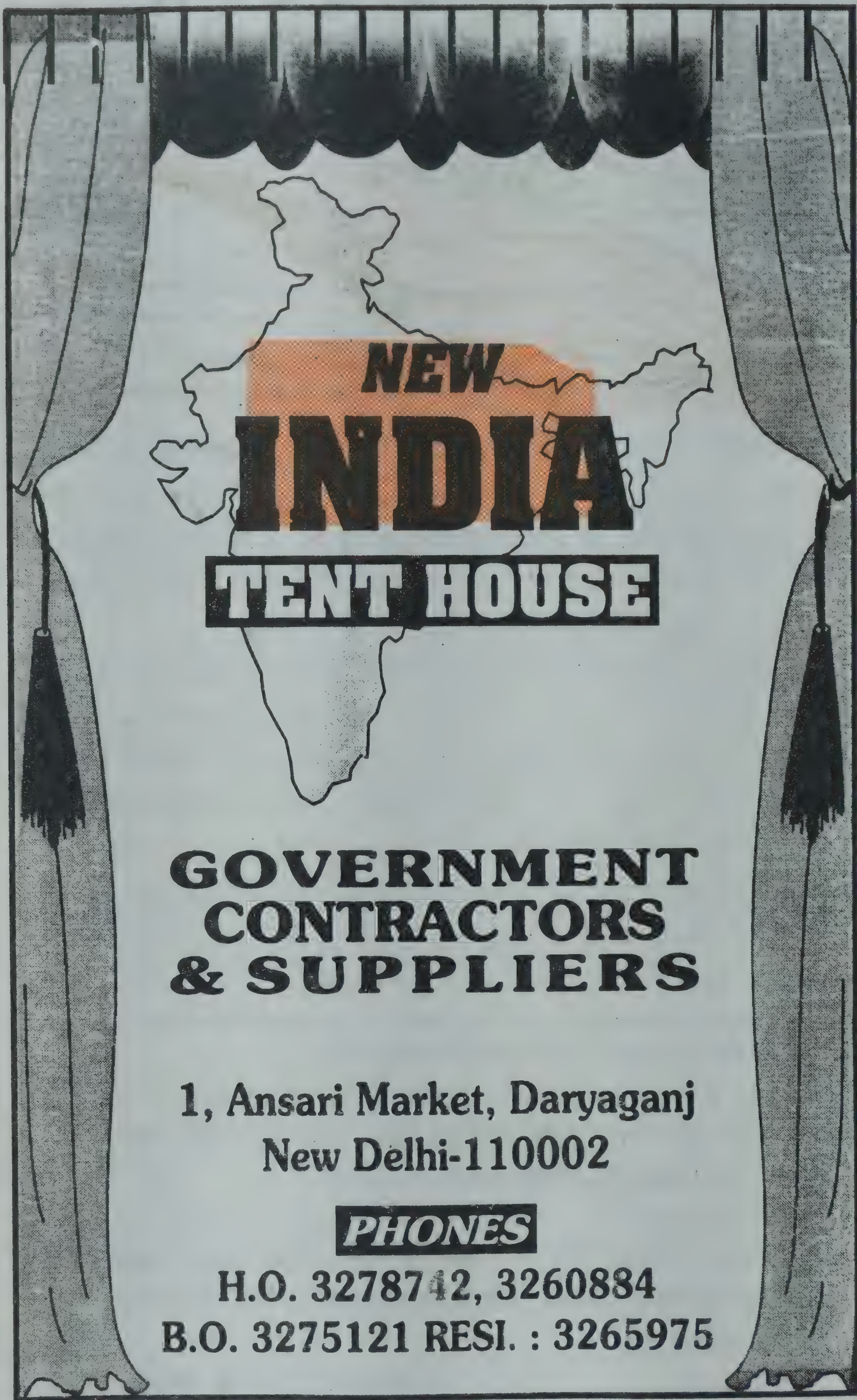
दादाजी ने उसी समय सन्देश प्रवाहित किया–तीन बातें याद रखो–

– अको नहीं अर्थात् उक्ताओं नहीं।

– थको नहीं व

– झको नहीं (किसी कार्य को करने के लिये, किसी से बात करते समय झिझक नहीं होना चाहिये।) यदि ये तीन गुण सीख लिये तो नौजवान सदा सफल रहेगा।

(निर्मल जोशी जी के प्रवचनों में से)

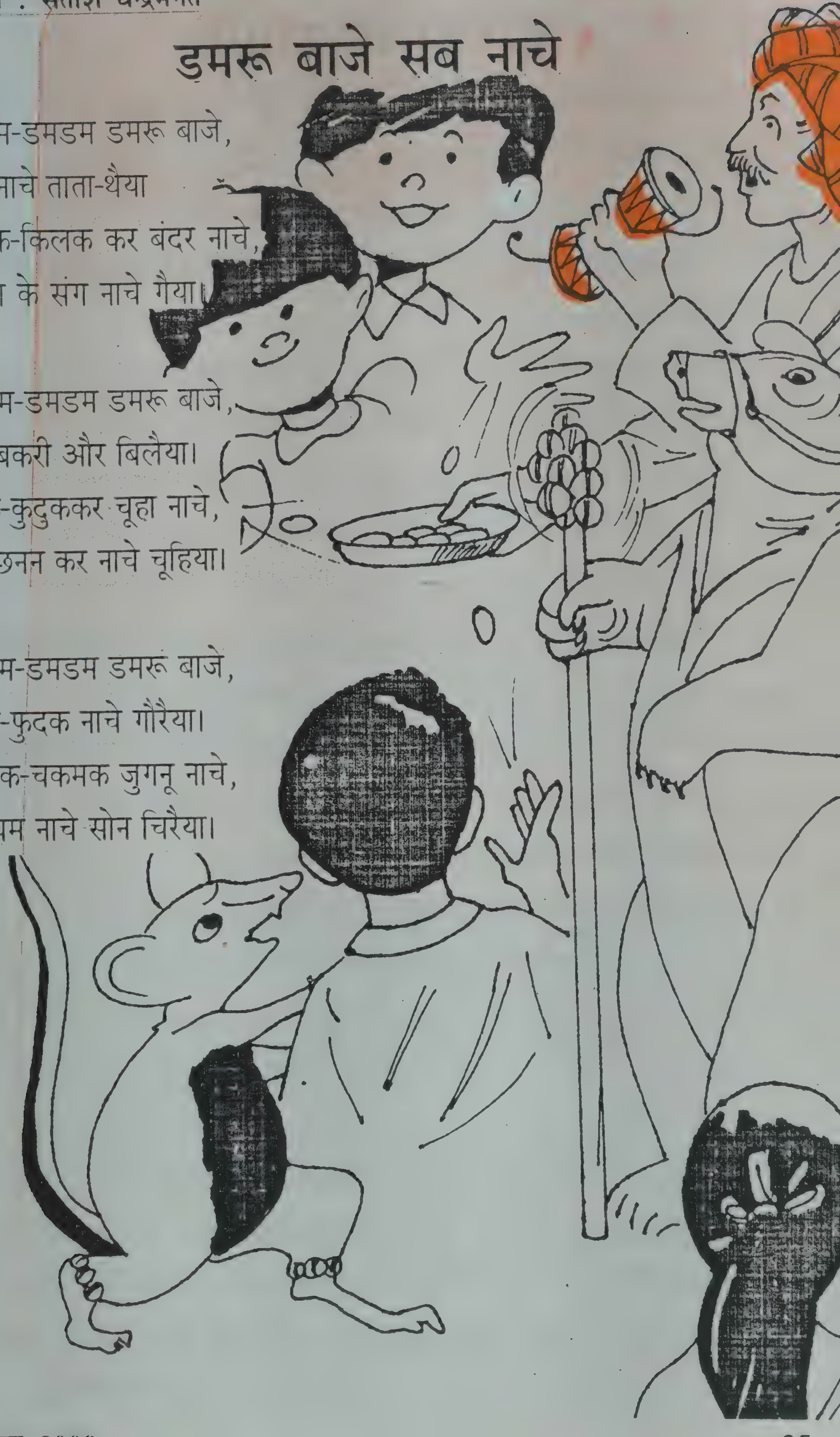

NEW
INDIA
TENT HOUSE
GOVERNMENT
CONTRACTORS
& SUPPLIERS
1, Ansari Market, Daryaganj
New Delhi-110002
PHONES
H.O. 3278742, 3260884
B.O. 3275121 RESI. : 3265975

डमरू बाजे सब नाचे

डमडम-डमडम डमरू बाजे,
भालू नाचे ताता-थैया
किलक-किलक कर बंदर नाचे,
बछड़ा के संग नाचे गैया।

डमडम-डमडम डमरू बाजे,
नाचे बकरी और बिलैया।
कुदुक-कुदुककर चूहा नाचे,
छूम-छनन कर नाचे चूहिया।

डमडम-डमडम डमरू बाजे,
फुदक-फुदक नाचे गौरैया।
चकमक-चकमक जुगनू नाचे,
चम-चम नाचे सोन चिरैया।



पैंसिल की कहानी

बच्चो, आज पैंसिल की उपयोगिता तुम सभी जानते हो। ये किस्म-किस्म की पैंसिलें तरह-तरह के कामों में हमेशा काम आती हैं। चित्रकार चित्रांकन पैंसिल से ही करता है, इंजीनियर, चिकित्सक बढ़ाई, कलाकार आदि सभी पैंसिल से ही अपने कार्य को पूर्णता देते हैं। आजकल बिल्कुल सामान्य सी चीज समझी जाने वाली पैंसिल की कहानी बड़ी ही दिलचस्प है।

पैंसिल का प्रथम रूप सोलहवीं शताब्दी के मध्यकाल में इंगलैंड के कंबरलैण्ड में वोटोडेल के निकट तब देखने को मिला जब तूफान से एक वृक्ष के जड़ से उखड़ जाने से उसके नीचे काले शीशे जैसा खनिज निकला। इस खनिज को सबसे पहले वहाँ के चरवाहों ने देखा और उसका उपयोग वे भेड़ों पर निशान लगाने के लिए करने लगे। बाद में कुछ लोगों ने उस काले खनिज को बाजार में पैकेटों पर निशान लगाने के लिए बेचना प्रारम्भ कर दिया। अठारहवीं शताब्दी में यह पता चलने पर कि यह सफाहट है वहाँ के बादशाह ने वोरोडेल खानराज्याधिकार में ले ली।

पैकेट पर निशान लगाने वाली ग्रेफाइट की छड़ों में सबसे बड़ी कमी यह थी कि वे जरा सा जोर लगाते ही टूट जाती थी और उनसे हाथ भी ज्यादा खराब होते थे, हाथ गंदे होने से बचाने के लिए लोग उस पर धागा लपेटने लगे। जैसे-जैसे ग्रेफाइट की छड़ घिसती जाती वैसे-वैसे वे उस पर बंधे धागे को खोलते जाते। इसी क्रम में लगभग 1761 में बवेरिया के कास्पर फेबर ने ग्रेफाइट के चूरे में गंधक, राल, एंटीमनी को मिलाकर उसकी पतली-पतली सलाखें बनायीं ये सलाखें जल्दी टूटती नहीं थी।

जब 1791 में जाने दशक में फ्रांस का इंगलैंड से युद्ध हुआ तो इंगलैंड ने फ्रांस को ये पैंसिलें देनी बंद कर दी तब फ्रांसीसी अविष्कारक निकोले जाक कोंत ने देश में उपलब्ध कम तथा हल्के किस्म के ग्रेफाइट में खडिया मिलाकर उसे पकाकया और इस नये मिश्रण से सर्वश्रेष्ठ ग्रेफाइट पैंसिलें तैयार कीं।

यही स्थिति 1812 में इंगलैंड के साथ युद्ध होने पर अमेरिका के सम्मुख उत्पन्न हुई तब वहाँ ग्रेफाइट में कई चीजें मिलाकर ग्रेफाइट छड़ें तैयार की गई लेकिन ये

छड़ें जल्दी टूट जाती थीं। इस समस्या का निदान विलियम मनरो ने मशीन द्वारा एक सी लकड़ियां आधे-आधे भाग में काटकर उनके बीच में खांचा बनाया, इस खांचे में ग्राफाइट की छड़ रखकर उसे गोंद से चपिका ि.या जाता था और इस प्रकार दुनिया की प्रथम आधुनिक किस्म की पैंसिल बनकर तैयार हुई।

आज जो पैंसिल बाजार में बिकती है उसमें लगभग 40 किस्म के पदार्थों का मिश्रण किया जाता है। देवदार की लकड़ी को चौकोर टुकड़ों में काटकर सुखा लेते हैं फिर उन्हें 5 मि. मी. मोटे, 70 मि. मी. चौड़े और 185 मि.मी. लम्बे हिस्सों में फिर काटा जाता है। बीच में कांचा बनाकर, ग्रेफाइट की छड़ रख, उसे चिपका दिया जाता है। तत्पश्चात् पैंसिल कम्पनियाँ उन्हें रंगकर अपने-अपने ट्रेडमार्क तथा पैंसिल की किस्म आदि चिंहित करके बाजार में बेचते हैं।

आज दुनिया मे 300 से अधिक किस्म की पैंसिलें बनती हैं, भारत में पाई जाने वाली लकड़ी अधिक भारी होने से तथा भारतीय वातावरण में प्रभावरहित रखने के लिए ग्रेफाइट मिश्रण में कुछ विशेष रसायन मिलाने के कारण भारतीय पैंसिल अमरीकी पैंसिल की तुलना में लगभग दुगनी भार वाली होती हैं। ●

लाल चिड़िया



हरी के आँगन में सुबह-शाम चिड़ियों की चहल-पहल लगी रहती। उसकी अम्मा दयालु तथा धार्मिक प्रवृत्ति की स्त्री थी। वह रोज चिड़ियों को दाना डालती। चिड़ियाँ हरी तथा उसकी अम्मा से बिल्कुल नहीं डरती थीं क्योंकि वे उनके स्वभाव से अच्छी तरह से परिचित थीं। एक नन्हीं-सी लाल चिड़िया, जिसे हरी ने लाल रंग से रंग रखा था, उसे बहुत प्यार करता था।

लाल चिड़िया इतनी निडर हो गई थी कि वह घर में कहीं भी घुस जाती; कभी रसोई घर में इधर से उधर फुदकती रहती। एक दिन की बात है— हरी की अम्मा रसोई में बैठी खाना बना रही थी। लाल चिड़िया भी वहीं मौजूद थी। तभी प्रेशर कुकर की सीटी बजी। सीटी की आवाज सुनते ही लाल चिड़िया एक दम घबरा गई। डर के मारे बाहर भाग गई। डर के मारे अब वह रसोई घर के अन्दर नहीं जाती थी।

—अम्मा! लाल चिड़िया आजकल रसोईघर में क्यों नहीं आती; उसे क्या हो गया है?—हरी ने अपनी अम्मा से पूछा।

—बेटे, यह एक दिन प्रेशर कुकर की सीटी बजने की आवाज से डर गई थी। उसी दिन से अन्दर आने से डरती है।—अम्मा ने उसे बताया।



हरी हर रोज उस चिड़िया को बड़े प्यार से पुकारता आ...जा...मेरी प्यारी लाल चिड़िया। वह उसके डर को दूर करना चाहता था। कई दिनों के बाद लाल चिड़िया डरती-डरती रसोई घर के अन्दर आ गई।ई।

हरी ने लाल चिड़िया को बड़े दुलार व प्यार से प्रेशर कुकर दिखाते हुए समझाया—देखो, इसमें खाना पकाया जाता है। इसमें डरने वाली कोई बात नहीं है। तुम बेवजह ही डर गई थी; मत डरो समझी— हरी ने प्रेशर कुकर का ढक्कन खोला। उसमें से भात निकालकर लाल चिड़िया को खिलाया। अब आगे से प्रेशर कुकर से मत डरना। समझी अक्ल की कच्ची। चिड़िया बड़े गौर से प्रेशर कुकर को देख रही थी जैसे वह हरी की पूरी बात समझ गई हो। अब वह फिर से इधर-उधर फुदकने लगी जैसे बहुत खुश हो। ●



शिकारी की प्रतिज्ञा

बहुत पहले की बात है। चन्दर नगरी के विशाल मन्दिर में एक महात्मा जी हिमालय पर तपस्या के लिये पधारे थे। वे प्रतिदिन अपने प्रभावशाली उपदेश दिया करते।

हाँ, उनके प्रेरक, ज्ञानवर्धक उपदेश सुनकर अनेक भक्तों ने व्रत नियम लिये। एक दिन एक शिकारी ने आकर कहा—महात्मा जी, मुझे भी कोई व्रत करने की इच्छा हो रही है।

महात्मा जी ने एक नजर शिकारी पर डाली, और पूछा—अच्छा, जरा यह तो बताओ— आखिर तुम करते क्या हो?

—मैं एक शिकारी हूँ, जंगल में जानवरों का शिकार करता हूँ।

—तो तुम शिकार खेलना छोड़ दो।

—लेकिन, महात्मा जी, जंगल में रहकर परिवार का पालन पोषण कैसे करूँगा?

तब महात्मा जी ने सुझाव दिया — अच्छा, तुम मांस खाना छोड़ दो।



शिकारी ने सोच-विचार कर कहा कि महात्मा जी, मैं खरगोश का मांस खाना छोड़ सकता हूँ।

महात्मा ने उसको धर्म वृद्धि का आशीर्वाद देते हुए कहा —अच्छा खरगोश का मांस खाना छोड़ दो।

शिकारी ने यह बात स्वीकार कर ली।

एक बार शिकारी बहुत बीमार पड़ गया। तब एक वैद्य ने उसे खरगोश का मांस खाने को कहा। परन्तु शिकारी अपने त्याग पर दृढ़ रहा। उसने खरगोश का मांस खाना स्वीकार न किया। वैद्य की सम्मति में उसके रोग की कोई और औषधी न थी।

शिकारी ने महात्मा से ली हुई प्रतिज्ञा का पालन किया वह मरकर देव योनि में पैदा हुआ। ❖

बच्चे यूँ सुधर जायेंगे

एक बार एक बच्चे के माता-पिता झुंझलाये हुए दादा जी (निर्मल जोशी) जी के पास आये। आते ही उन्होंने कहा— दादा जी, हमारे बच्चे हमारी बात ही नहीं सुनते। हम जब भी कुछ कहना चाहते हैं तब वे या तो कहीं चल देते हैं या हमारी बात अनसुनी कर देते हैं।

दादा जी ने बताया—देखो, जब ये बच्चे छोटे रहे होंगे, तब आप या तो इन्हें चुप करवा देते होंगे या आप अपने काम में मस्त रहते होंगे। अर्थात् पहले आपने इनकी भावनाओं की कद्र नहीं की। अब ये ऐसा ही कर रहे है। तब इन्हें भी ऐसा ही लग रहा होगा जैसा आप को अब लग रहा है।

— तो अब हम क्या करें? — उन दोनों ने पूछा।

दादा जी ने बताया— देखो उनकी हर बात को, चाहे वह गलत भी हो पहले ध्यान से सुन लें फिर उन्हें समझाने का प्रयास करें। फिर आपको ये सुनेंगे भी आपका सम्मान भी करेंगे।

याद रखने योग्य बात यही है कि जैसा सम्मान हम दूसरों से चाहते हैं वैसा ही हम स्वयं भी करें।

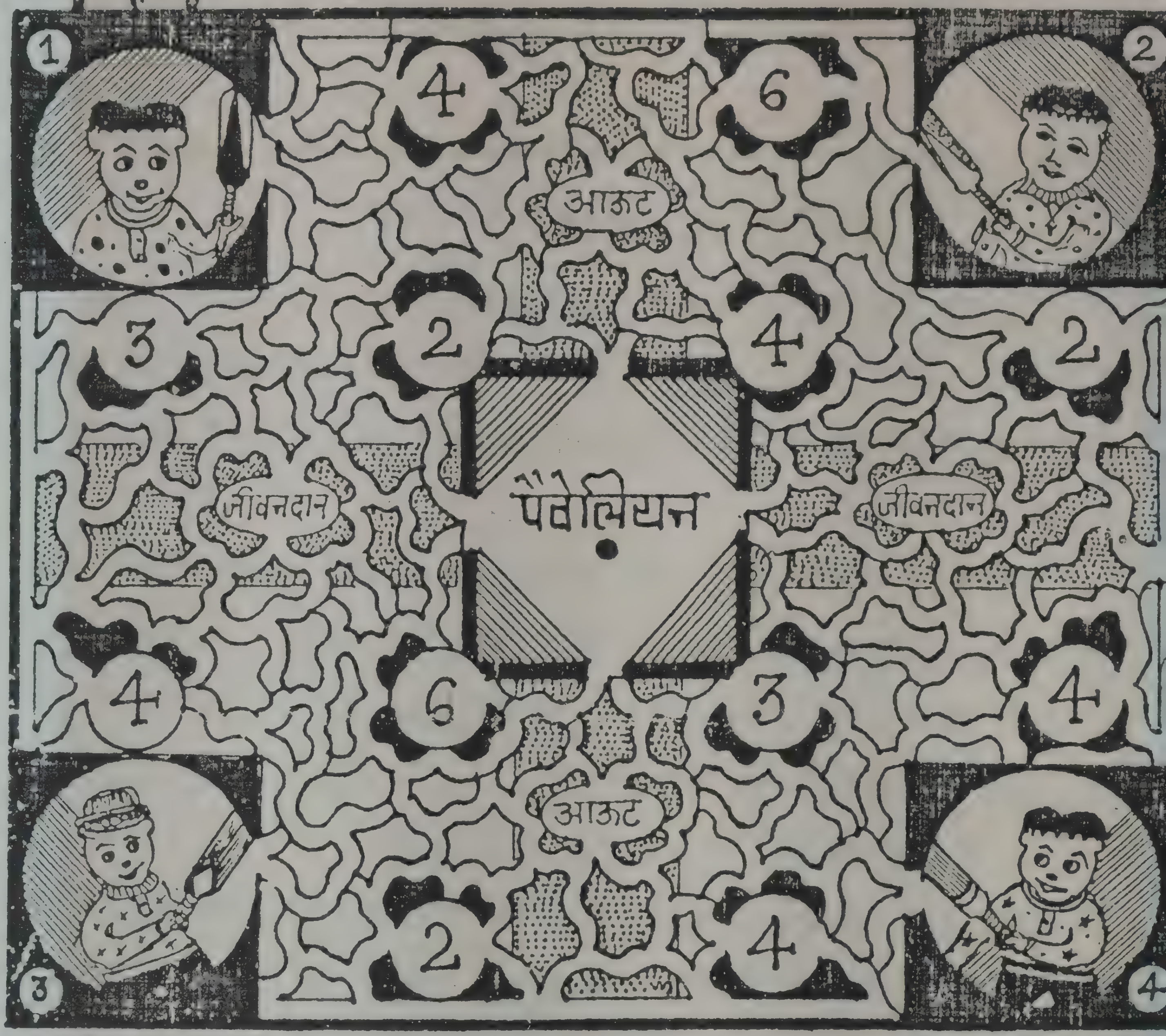
क्रिकेट प्रश्नोत्तर पहेली

चारों बल्लेबाजों को पैवेलियन पहुँचाते हुए निम्न प्रश्नों के उत्तर दो:-

[1] बल्लेबाज नं. 1 पैवेलियन लौटने तक कितने चौके लगा चुका होगा?

[2] बल्लेबाज नं. 2 व 3 ने कुल कितने-कितने रन बनाये?

[3] चारों बल्लेबाज पैवेलियन लौटने तक कुल कितने रन बना सके?



उत्तर: [1] एक चौका [2] बल्लेबाज नं. 2 ने 10 रन बनाये व नं. 3 ने कोई रन नहीं बनाया [3] कुल 23 रन बने।

राजेन्द्र कुमार बाड़मेरा, ब्यावर

शेर की शादी

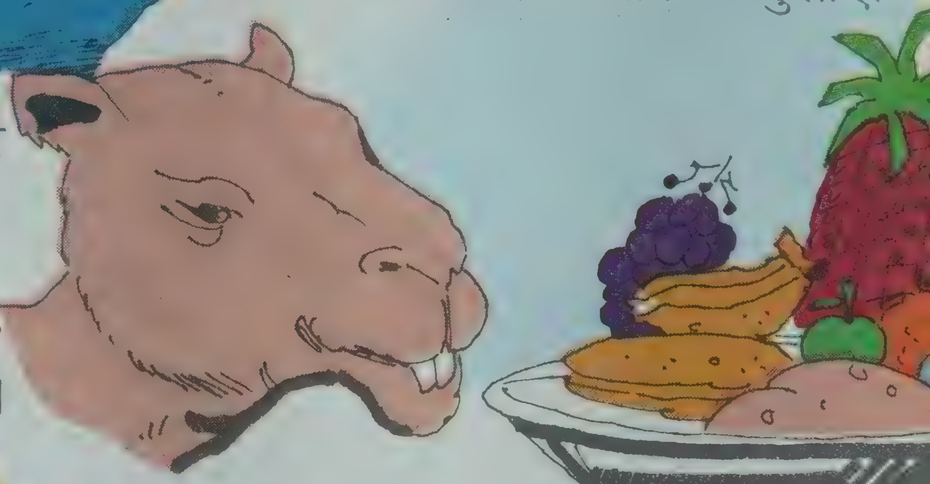


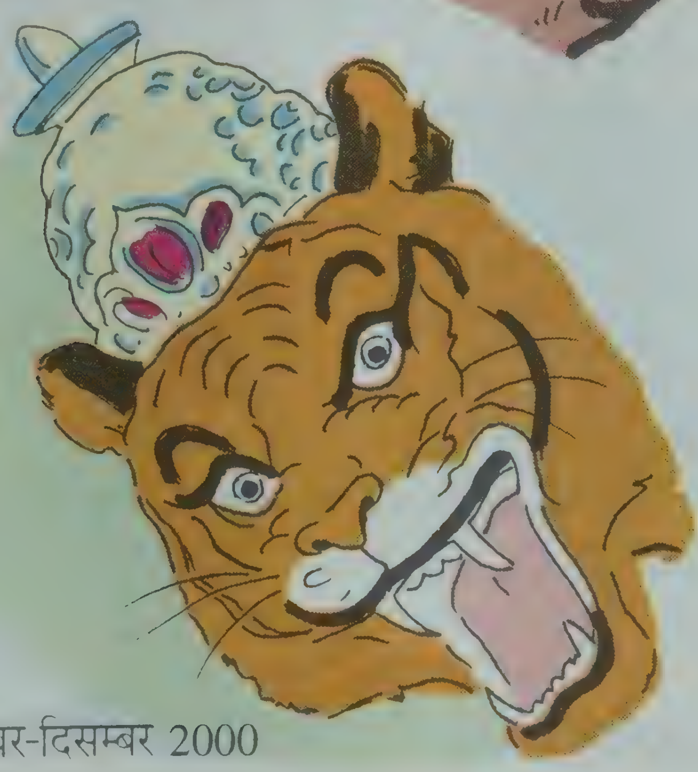
बब्बर शेर की शादी में,
जंगल में मंगल छाया।
हाथी भालू नाचे जमकर,
गधा-मण्डली ने गाया।



झूम-झूमकर ऊँट तो
डिस्को नाच दिखाए,
छत्र लिए था जिराफ हाथ में
चंवर बाघ डुलाए।

बड़ी उमंग में सभी बाराती
समधी के घर जाते।
लगा था पकवानों का मेला,
जी-जी भर सब खाते।





सुंदर सलौनी दुल्हनियाँ
शेर संग बैठी शर्माई।
जंगल के सब जानवरों के,
भाभी जी मन भाई।


वाह...वाह...क्या कहने·छाबड़ा कैनवस के !
न धूल-मिट्टी की चिन्ता, न बारिश का डर !!
छाबड़ा CC Chhabra
CANVAS STORE
Specialist In :
TRUCK TIRPAL
Dealers In:
• CANVAS • JEEP HOOD • SCOOTER & CAR COVERS
132. 133, AZAD MARKET, DELHI-110006.
Phones : Shop : 736818, 3556819 Resi. : 5584340


पूसी
माँ, मैं दशहरा देखने जाऊँगी। मुझे पचास रुपये दे दो
ठीक है, ये ले लो—मगर कोई शरारत न करना
पचास रुपये लेकर शैली के घर जाती है।
क्या बात है पूसी! तुम ... इस समय।


चलो चलती हो दशहरा देखने?
मैं तैयार हूँ; मगर तुम कोई शरारत न करना
ठीक है! अच्छा बाबा अब तो चलो ...
पूसी तुम यहां मत आना। यहाँ पटाखा ...
... परन्तु रास्ते में बच्चे उन दोनों के आते हुए देख लेते हैं।
अहा! अब मजा आयेगा


मैं भला डरती हूँ बम से?
यह कहकर वह आगे बढ़ती है .... उधर ...
धड़ाम
मर गई
शैली उसे उठाती है—
इस बार तो बच गई। अब ध्यान से ...।
मेले में —
पूसी चुपके से रावण के पुतले में आग लगा देती है।

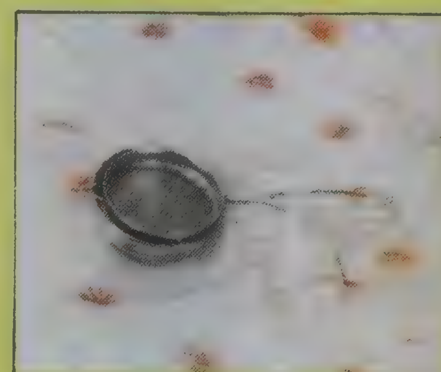

पूसी ने आग लगाई । फिर भागी। पर ... धड़ाम् से गिरी...।
तभी रावण का जलता हुआ एक हाथ उसके पैर पर जा गिरा।
मैने कितना समझाया... पर तू ...
माफ करदो, माँ प्लीज!

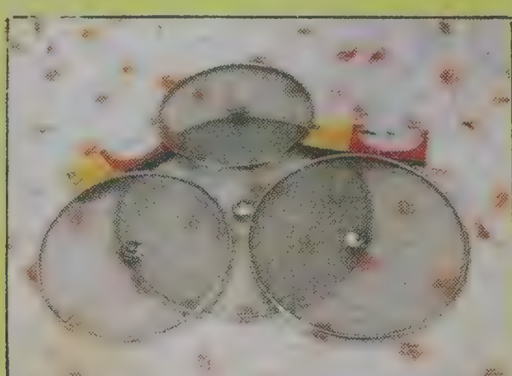












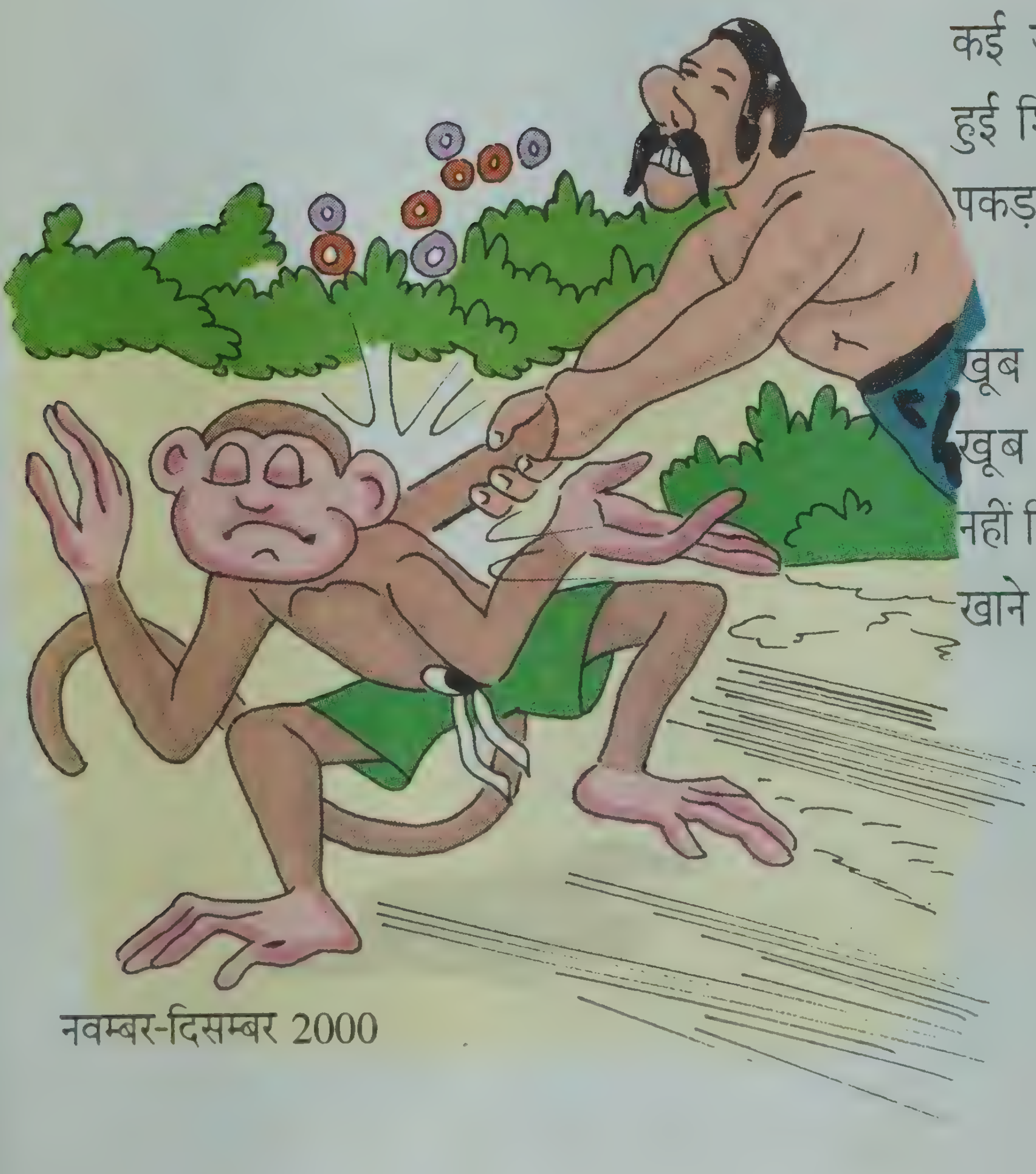


बंदर की दुकान



एक बार को चम्पक वन में
लगा हुआ था मेला।
बिल्लू बंदर ने मेले में
लगा दिया था ठेला।

गरम जलेबी और पकौड़ी,
चाट समोसे के क्या कहने।
मिलावटी माल बेचूँगा मैं,
लाऊँगा बीबी के गहने।



खाकर उसकी चाट पकौड़ी,
कई जानवर हुए बीमार।
हुई शिकायत तब उसको
पकड़ ले गया थानेदार।

खूब पड़े डंडे उसको
खूब थी हुई पिटाई,
नहीं मिलावट करूँ कसम,
खाने पर हुई रिहाई।


प्यारी दुनिया

न्यारी दुनिया



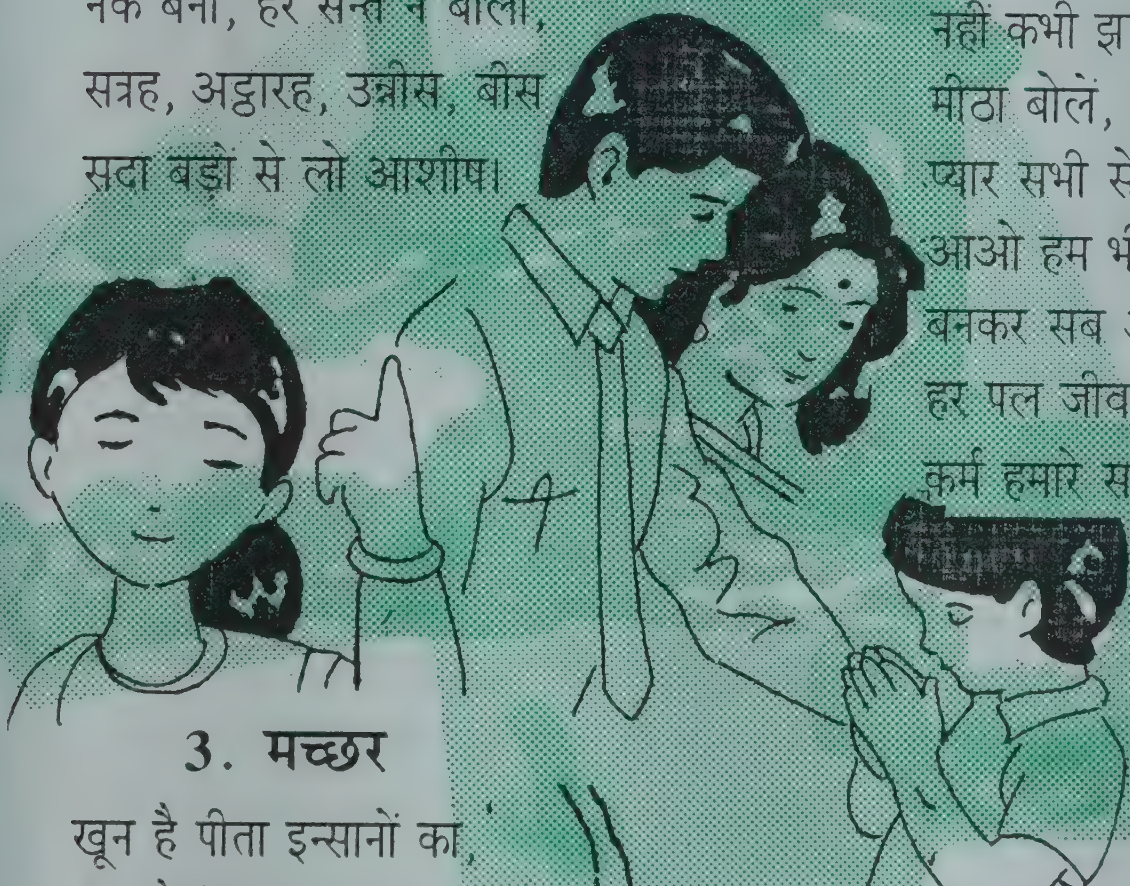
1. गिनती कर

एक, दो, तीन, चार।
हर पल रखे, शुद्ध विचार।।
पाँच, छः,सात-आठ।
पढ़ लें प्यार अमन का पाठ
नौ, दस, ग्यारह, बारह,
हर मानव हो हमको प्यारा।
तेरह, चौदह, पन्द्रह, सोलह
नेक बनो, हर सन्त ने बोला,
सत्रह, अट्ठारह, उन्नीस, बीस
सदा बड़ों से लो आशीष।



2. अच्छे बच्चे

अच्छे बच्चे जल्दी उठकर,
होते हैं तैयार;
सबसे पहले मात-पिता का,
करते हैं सत्कार।
अच्छे बच्चे अपना मन,
पढ़ने में खूब लगाएं;
हर पल सच्चाई के पथ पर,
आगे बढ़ते जाएं।
अच्छे बच्चे भूले से भी,
नहीं कभी झगड़ते;
मीठा बोलें, मिल-जुल बैठें,
प्यार सभी से करते।
आओ हम भी दिखलाएं,
बनकर सब अच्छे बच्चे;
हर पल जीवन के पथ में हों,
कर्म हमारे सच्चे।



3. मच्छर

खून है पीता इन्सानों का,
नाम हैं जिसका मच्छर;
बहुत बड़ा जालिम है ये,
आतंक फैलाए घर-घर।
सबके पास कानों में आकर,
हर पल गीत सुनाए;
लेकिन कोई न जाने कब ये,
खाए काट कहीं पर।



इससे बचने की खातिर,
करते हैं बहुत उपाय;
बड़े-बड़े बलशाली को भी,
इससे लगता है डर।
बहुत बड़ा जालिम है ये,
आतंक फैलाए घर-घरं।।

हमारे सन्त (लेख) : श्रीराम प्रजापति

श्री जीवन सिंह चुघ



स्थान : भारत सरकार का रक्षा मंत्रालय।

समय : सायं साढे पाँच बजे।

मंत्रालय का एक कनिष्ठ अधिकारी बाहर निकलता है, मुख्य द्वार पर ही उनका अधीनस्थ कर्मचारी जो क्लर्क है, कुछ गुजारिश करने के लिए आगे बढ़ता है किन्तु वह अधिकारी सख्त व्यवहार करते हुए उस कर्मचारी की बात सुने बिना आगे बढ़ जाता है। ठीक उसी वक्त उप सचिव स्तर के वरिष्ठ अधिकारी बाहर आते हैं, उस कर्मचारी को मायूस देखकर पूछते हैं क्या बात है? वह कहता है 'साहब, घर पर मेरी पत्नी की तबियत बहुत खराब है, कुछ रुपयों की आवश्यकता है।' तुरन्त ही वह महाशय अपने पर्स से 500 रुपये निकाल कर उसे थमा देते हैं और गाड़ी में बैठकर घर की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। वह उस जरूरतमन्द के शुक्रिया कहने का भी इन्तजार नहीं करते। ऐसे जरूरतमंदों के प्रति हृदय में करुणा और दया की भावना से व्यवहार करने वाले और कोई नही बल्कि श्री जीवन सिंह चुघ ही थे जिन्होंने कभी भी अफसर वाला रोब नहीं दिखाया बल्कि सदैव विनम्र भाव ही प्रदर्शित किया।

कर्मयोगी सन्त, समर्पित गुरुभक्त, मिलनसार एवं मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी, परोपकारी, निःस्वार्थ सेवाभावी तथा विनम्र स्वभाव वाले श्री जीवन सिंह जी चुघ की मानव हितार्थ की गई सेवाएं निरंकारी जगत में सदैव अविस्मरणीय रहेंगी। आपने सन्त निरंकारी मिशन की जनसंचार प्रणाली की एक शानदार इमारत की ऐसी मजबूत नींव रखी है जिसके अद्भुत प्रांगण में आने वाली पीढ़ी इस महान मिशन के विश्व-बन्धुत्व के सन्देश को प्रभावशाली ढंग से जन-जन तक पहुँचाती रहेगी।

आपका जन्म 17अप्रैल, 1921 को ग्राम छाता, जिला झंग (पाकिस्तान) में हुआ। आपने 1940 में डी.ए.वी. हाई स्कूल, रावलपिंडी से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जुलाई 1940 में आपने सैनिक यूनिट में सुपरवाईजर के रूप में व्यावसायिक जीवन की शुरूआत की। 1944 में आपने पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। सितम्बर, 1947 में देश विभाजन के पश्चात्

आपका परिवार दिल्ली आ गया। श्री चुघ जी ने रक्षा मंत्रालय में सहायक के रूप में कार्य किया और दो माह में ही नवम्बर, 1947 में ग्रेड परीक्षा में सफलता प्राप्त कर ली। आपने कर्तव्य-परायणता एवं समर्पित भाव से कार्य करके रक्षा मंत्रालय से अपने कैरियर की शुरूआत की और निरन्तर सफलताएं अर्जित करते हुए उप सचिव के पद पर पहुँचे, अप्रैल 1979 में आप इसी पद से सेवा निवृत्त हुए। इसी वर्ष आपको सन्त निरंकारी मण्डल का सचिव नियुक्त किया गया।

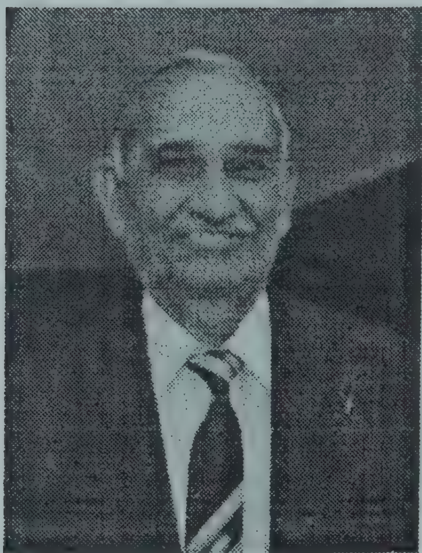
आपका अंग्रेजी भाषा, विशेषतः 'न्यूज व व्यूज' पर पूर्ण अधिकार था। आपके सफल प्रयासों से 1957 में पहली बार मिशन के समाचार, समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुए। 1959 में आकाशवाणी से पहली बार समाचार प्रसारित हुआ परन्तु महत्वपूर्ण उपलब्धि तब हासिल हुई जब भारत सरकार के फिल्म प्रभाग द्वारा 'इंडियन न्यूज रिव्यू' (आई.एन. आर.) के माध्यम से मिशन से संबंधित एक वृत्त चित्र समस्त भारत के सिनेमा घरों में फिल्म प्रदर्शन से पूर्व दिखाया गया।

इससे उत्साहित होकर 1973 की ऐतिहासिक मसूरी कान्फ्रेंस में श्री चुघ ने एक प्रस्ताव रखा जिसमें मीडिया द्वारा सत्य संदेश को विधिवत् रूप में जनसाधारण तक पहुँचाने की बात भी कही गई थी। उसी समय से आपने मीडिया के साथ रचनात्मक तालमेल और समन्वय बनाया और अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त किया।

यह निश्चिततौर से कहा जा सकता है कि मीडिया ने मिशन के मानव एकता, शान्ति एवं विश्व-बन्धुत्व के संदेश को मुख्य रूप से प्रसारित किया।

जनसंचार के क्षेत्र में आज जब सैटेलाइट चैनल्स द्वारा गंभीर चुनौती दी जा रही है ऐसे माहौल में श्री चुघ ने अपने सहयोगियों के साथ मिशन का सन्देश इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से बखूबी प्रसारित किया। आकाशवाणी और दूरदर्शन के अतिरिक्त अनेक विश्वव्यापी चैनल्स द्वारा मिशन के समागमों को कवर किया। सिटी चैनल, ए.एन.आई. तथा जी.टी.वी. ने निरंकारी बाबा जी के प्रवचनों पर आधारित कैसेट्स का प्रसारण प्रारम्भ किया।

अपनी श्रद्धा-भक्ति, विश्वास एवं निःस्वार्थ सेवा भावना के बल पर प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क द्वारा मिशन की छवि को उच्च शिखर तक पहुँचाने वाले श्री जीवन सिंह चुघ जी 31 जुलाई, 2000 को नश्वर शरीर त्यागकर ब्रह्मलीन हो गये। आप जीवन के अंतिम क्षण तक प्रैस एवं जनसम्पर्क विभाग के प्रभारी के रूप में मिशन के सत्य, प्रेम एवं शान्ति के सन्देश को मीडिया द्वारा प्रसारित करते रहे। आपने यह दायित्व पूर्ण निष्ठा व लगन से निभाया।



श्री बी. एस. निम

एक छोटा सा बच्चा आग पर रोटी सेक कर खेतों में काम कर रहे अपने पिता को देकर आता है। फिर घर आकर अपने विद्यालय की तैयारी करता व विद्यालय से वापस लौट कर गृह कार्य कर अपना दिन बिता देता है। इस प्रकार उस कोमल से बचपन में ही पूरी मेहनत कर जैसे कठिनाइयों से लड़ने की ताकत प्राप्त कर रहा हो, यह बात सिद्ध तब हुई जब इसी बालक ने सन् 1942 में दसवीं कक्षा में पूरे उत्तर प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपना व अपने माता-पिता का नाम रोशन किया। इस मेधावी बालक का नाम ही श्री बी. एस. निम था। इतना ही नहीं, निम जी की इस प्रतिभा से प्रभावित होकर एक ब्रिटिश नागरिक ने सिकन्दराबाद उनके घर आकर उन्हें आगरा के मशहूर कालेज सेंट जॉन्स कॉलेज में भर्ती होने का न्यौता दिया। जहाँ से उन्होंने 1946 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

श्री निम जी का जन्म 4 जनवरी सन् 1924 में सिकन्दराबाद (उ. प्र.) में हुआ। आप जब तीन वर्ष के थे तभी आपकी माता जी का देहान्त हो गया इसलिए आपकी दादी ने ही आपका लालन-पालन किया। सिकन्दराबाद में ही दसवीं पास करने के बाद आपने आगरा से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और जल्द ही आपको सरकारी नौकरी भी मिल गई। विभिन्न विभागों में सफलतापूर्वक कार्य करते हुए आप अन्त में वित्त मंत्रालय में निदेशक के पद तक आ पहुँचे। सन् 1982 में आप इसी पद से सेवा निवृत्त् हुए।

आप सामाजिक सेवा के प्रति सदा समर्पित रहे, उसके लिये आवश्यक गुण आप में कूट-कूट कर भरे हुए थे। इसी कारण सन् 1965 में मानव सेवा में रत निरंकारी मिशन में उनकी आस्था बन गई। सेवा की लगन तो उनमें पहले ही थी मिशन के द्वारा आत्म-दर्शन कर लेने के बाद उनकी यह भावना और बलवती हो गई तथा मिशन में ही साधारण सदस्य से लेकर अ. भा. कार्यकारी समिति के चेयरमेन के पद तक जल्दी ही आ पहुँचे। अप्रैल, 2000 में आपको निरंकारी बाबा जी ने प्रबन्धक समिति का सदस्य मनोनीत कर सामान्य प्रशासन विभाग का प्रभारी बनाया। हर पद को शीघ्र-अति-शीघ्र पार करते रहने की प्रवृत्ति रुकी नहीं और 2 अगस्त, 2000 को आपने परम पद प्राप्त करने के लिए इस नश्वर शरीर को भी त्याग दिया।

अफ्रीका की भयानक चींटी

हमारा संसार अजब रहस्यों से भरा है। इसमें पाये जाने वाले विभिन्न प्राणी अपनी विलक्षण आदतों तथा आकार प्रकार के लिये प्रसिद्ध हैं। इन्हीं विभिन्न प्राणियों में अफ्रीका में पाई जाने वाली चींटी अत्यन्त भयानक होती है। अपने नाम के एकदम प्रतिकूल यह चींटियाँ साधारण घरों में पाई जाने वाली निरीह चींटियों से बिल्कुल भिन्न है।

संसार भर में चींटियों की लगभग 10,000 प्रजातियाँ पायी जाती है। मध्य और दक्षिणी अमरीका में चींटियों की एक विशेष जाती पायी जाती हैं। जिन्हें 'लीफ कटर या पैरुसोल' कहा जाता है।

इन चींटियों के गहन वैज्ञानिक अध्ययन के बाद जो निष्कर्ष निकाले गये हैं वे अत्यन्त रोचक और चौकाने वाले हैं। इन चींटियों की अलग से अपनी एक सम्पूर्ण व्यवस्था है। जिनमें चींटी रानी, पुरुष मजदूर, इंजीनियर, अंगरक्षक, भोजन-सामग्री ढोने वाली चींटियाँ, सेवक, नर्स तथा गुलाम होते हैं।

यह भयानक चींटियाँ सेना के रूप में लाखों-करोड़ों की संख्या में समूह बनाकर जब एक स्थान से दूसरे स्थान को जाती हैं तो एक विचित्र प्रकार की आवाज़ होती है। शेर, हाथी तथा दूसरे जानवर उस भयानक आवाज़ को सुनकर इतने डर जाते हैं कि वह वहाँ से कई कोस दूर चले जाते हैं। लाल और काले रंग की चींटियों की आवाज़ सुनते ही अफ्रीका में निवास करने वाले लोग भी अपनी बस्ती के आस-पास आग जला देते हैं। जिस कारण यह चींटियाँ उनकी बस्ती के समीप नहीं आती। उनके मार्ग में छोटा या बड़ा जानवर फंस जाए तो ये चींटियाँ उसको चारों तरफ से घेर लेती हैं। और मिनटों में उसे चट कर जाती हैं। कुछ क्षण के बाद उस स्थल पर मात्र उसकी हड्डियाँ ही पड़ी मिलती हैं।

चींटियों में सूंघने की विलक्षण शक्ति होती है। प्रायः चींटियाँ एक के पीछे एक पंक्ति में चलती हैं। कभी-कभी आगे वाली चींटी बहुत दूर निकल जाए तो पीछे आने वाली चींटियाँ रास्ता नहीं भटकती क्योंकि आगे वाली चींटियाँ अपने शरीर से एक प्रकार का द्रव्य रास्ते में छोड़कर जाती हैं। पीछे की चींटियाँ उसी द्रव्य को सूंघकर आगे वाली चींटियों का अनुसरण करती हैं।

प्रत्येक चींटियों का वजन 7 ग्राम से लेकर दस ग्राम तक होता है। और लम्बाई चार इंच से पाँच इंच होती है। परन्तु मादा चींटी नर से कुछ कम भार की होती है।

परन्तु वह नर से अधिक विषैली तथा क्रोधित होती है। उनके दांतों में अधिक विष होता है। उनके काटने से मनुष्य को उस समय ऐसा लगता है जैसे कोई साधारण चींटी ने काटा हो। परन्तु कुछ समय बाद उस जगह में खाज होने लगती है और कटे हुए स्थान पर जले हुए के समान फफोले पड़ जातेहैं। उन में नीले रंग का पानी भर जाता है। उस समय मनुष्य पीड़ा से विचलित हो उठता है। समूचा शरीर एंठने लगता है। तेज बुखार होने के कारण गला सूख जाता है। बार-बार प्यास लगने लगती है। उस फफोले से जो पानी निकलता है अगर वह शरीर के दूसरे हिस्से में लग जाये तो वहाँ भी फफोले पड़ जाते हैं। उस व्यक्ति की आँखें अंगारों के समान लाल हो जाती हैं। बार-बार उल्टी आती है और घबराहट महसूस होती है। ऐसी स्थिति में उसकी मृत्यु हो जाती है।

इन चींटियों में प्रमुख रानी चींटी को अंगरक्षक चींटियाँ हमेशा घेर कर चलती हैं। चींटी दल का अपना कोई घर नहीं होता। घूमते हुए खाते रहना ही इनका काम है। वे रात में नहीं चलती। रात्रि विश्राम के समय ये रानी चींटी को घेरकर एक गोल घेरा बना लेती हैं। सुबह होते ही वे पुनः अपने अभियान पर निकल पड़ती हैं। सोलह दिनों तक लगातार घूमते रहने के बाद सत्रहवें दिन यह चींटी दल अपना शिविर लगता है क्योंकि सोलह दिन की अगवाही के बाद रानी चींटी को अंडे देने होते हैं। जब रानी चींटी पहली बार अंडे देती है तो अंडे उसके लिए आश्चर्य की वस्तुएँ होते हैं और वह इन्हें खा जाती है। लेकिन दूसरी बार वह फिर अंडे देती है जिनकी संख्या कम से कम एक हजार होती हैं। इनका रंग हल्का पीला होता है। लगभग पन्द्रह दिनों में ये अंडों में से बच्चे निकल आते हैं। इनकी पर्याप्त देखभाल की जाती है।

जिस प्रकार दीमक मिट्टी का घर बनता है ठीक उसी प्रकार यह चींटियाँ भी जमीन के अन्दर मिट्टी का घर बनाकर रहती हैं। चींटियों के बिलों में अनेकों कमरे बने होते हैं। कोई भोजन रखने के लिए कोई अंडे के लिए व कोई रानी के लिए। चींटियां अपने मेहमानों का भी स्वागत करती हैं। इनके मेहमानों में कई प्रकार के छोटे-छोटे कीट होते हैं मेहमानों के लिए अलग कक्ष बना होता है।

शीतकाल में यह कहीं नहीं जातीं बल्कि अपना इकट्ठा किया हुआ भोजन ही करती हैं। अगर अभियान के दौरान मार्ग में कोई नदी या नाला आ जाए तो इंजीनियर चींटियाँ एक दूसरे के पैरों में पैर फंसाकर पुल तैयार कर देती हैं। जिस पर से होकर पूरा चींटी दल पानी के बहाव के संग बहता-बहता किनारे लग जाती हैं। ●

सच होते सपने

आज तो शरबती बहुत ही गम्भीर दिख रही थी। उसे अपना भविष्य धुंधला नजर आ रहा था। मजदूरों का जीवन भी कोई जीवन होता है। मजदूरी करते-करते पति-पत्नी बहुत तंग आ चुके हैं। इससे तो बंजारे ही भले। जहाँ चाहा, तम्बू गाढ़ दिया और सुख-चैन से रहने लगे। उनका अपना जीवन तो तालाब के रूके हुए पानी के समान है जिसमें सड़ांध आती रहती है।

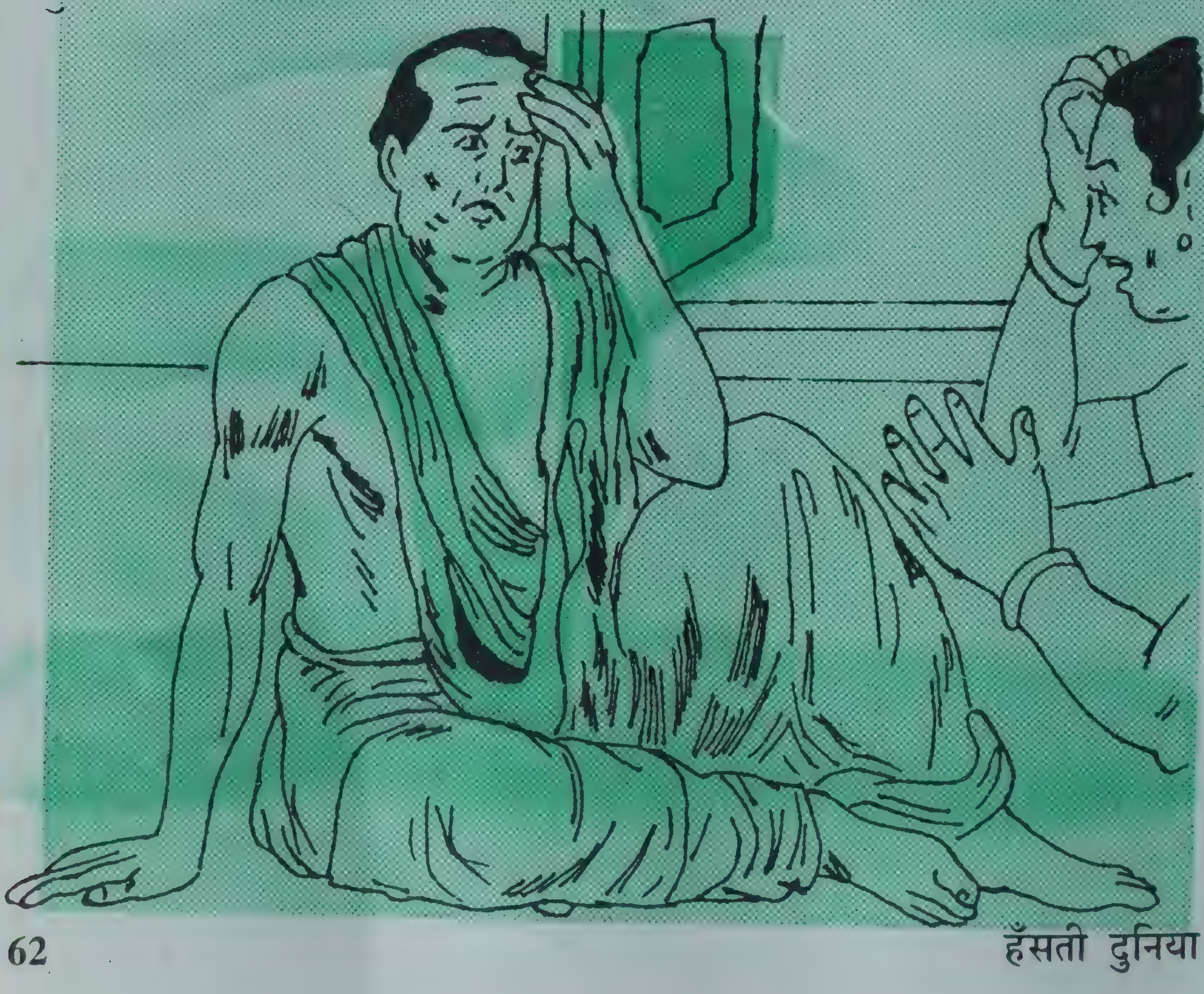
—क्यों?— सुखराम ने पत्नी को सवालिए निगाहों से देखा।

—मैं कल की सोच रही हूँ— शरबती का गंभीर स्वर था, कल हमारे बच्चे हम पर थूकेंगे। वे कहेंगे कि हम लोगों ने माँ-बाप का फर्ज पूरा नहीं किया।

—अपने भाग्य में यही लिखा हुआ है। सुखराम भाग्य को कोसने लगा, मजदूर लोगों को ज्यादा नहीं सोचना चाहिए।

—क्यों नहीं सोचना चाहिए? शरबती ने पति की बोलती बंद कर दी।

सुखराम ने नीची निगाहें कर लीं। शरबती का चिंतन फिर से उबाल खाने लगा।



उसे अपने मायके की याद आने लगी। उस बस्ती में सभी गरीब लोग रहा करते हैं। लेकिन वे सभी तो कमाऊ और जुझारू हैं। सब स्वाभिमान का जीवन जिया करते हैं। उनके हाथों में तरह-तरह का शिल्प है। कोई रंगरेज है तो कोई चटाइयाँ बनाने का काम किया करता है। कुछ लोग पत्तल बनाया करते हैं। सारे परिवार वाले उस धंधे में अच्छी कमाई कर लेते हैं।

शरबती को अपने धंधे से घृणा हो आई, आक थू।

सुखराम चुपचाप बीड़ी पीता रहा। पति की वह चुप्पी शरबती को अखर गई। उसने उसकी ओर तीर छोड़ा, तुम ही कौन से अच्छे हो। अपनी पत्नी को दूसरों के आगे हाथ फैलाते देखकर तुम्हें तनिक भी तो लाज नहीं आती। पिछले महीने शरबती छलनी पर बजरी छान रही थी। दूसरे मजदूर भी अपने-अपने काम में लगे हुए थे। सामने ही उसका पति मसाला बना रहा था। तभी न जाने किधर से उसके पास ठेकेदार चला आया था। शरबती ने उसकी अनदेखी कर दी थी। परन्तु ठेकेदार उसे तंग करने लगा। उसे कभी कुछ कहता।

शरबती ने उस पर जलती हुई निगाह डाली थी। उसे मुंह लगाना उसने ठीक नहीं समझा था। वह अपना काम करती रही थी। वह निर्लज ठेकेदार टला नहीं।

—कभी-कभी आराम भी लिया कर। ठेकेदार खिसियाकर बोला, यों हर समय..।

शरबती उसे खा जाने वाली नजरों से देखने लगी।

—तो?

— बड़े बाबू तुझे चाय पानी पिलाना चाहते हैं। ठेकेदार बोला।

— शरबती ने उसे झिड़क दिया।

—बाप रे, ठेकेदार वहाँ से दुम दबाकर चल दिया था।

शाम को शरबती ने पति से ठेकेदार के उस दुर्व्यवहार की चर्चा की थी। इस पर सुखराम ने कुछ नहीं कहा था। वह उसे लताड़ने लगी थी, तुम भी कैसे मर्द हो। कोई तुम्हारी पत्नी को छेड़े और तुम तमाशा देखते रहो।

—इसमें तमाशे की क्या बात है? सुखराम ने झुंझलाकर प्रतिवाद किया था, कोई किसी से हंस बोल ले तो इसमें बुरा क्या मानना।



शरबती को पति की उस बात पर आश्चर्य ही हुआ था। वह मर्द भी किस काम का जो अपनी औरत की रक्षा न कर सके।

उसी समय उसने प्रण कर लिया था कि वह मजदूरी के जीवन से छुटकारा पा लेगी। तब से दिन-रात वह इसी पर सोचती आ रही है।

—फिर सोचा है कुछ?— शरबती ने पति से पूछा।

—क्या? —सुखराम उसे देखने लगा।

—इस मजदूरी से छुटकारा पाने का!

—मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। —सुखराम सिर खुजलाने लगा, इस पर तुम्हें ही सोचना है।

—फिर ऐसा करते हैं—शरबती उसे अपनी योजना से अवगत कराने लगी। कल से ही हम नये जीवन की शुरूआत करने लगेंगे।

—वो कैसे?

—मैं सड़क की पटरी पर बैठकर सब्जी बेचा करूंगी।— शरबती ने कहा, तुम तड़के ही मंडी से सब्जी खरीद लाया करना।

—लेकिन इसके लिए रूपये-पैसे?

—वो मैं दे दिया करूँगी। शरबती बोली।

—फिर ठीक है।— सुखराम ने संतोष की सांस ली,— तुम कहती हो तो यही ठीक रहेगा।

दूसरे दिन सुबह बड़े तड़के ही शरबती अपने पति को जगाने लगी, —अरे उठो न! तुम्हें सब्जी लेने सब्जी मंडी जाना है।

सुखराम ने उठकर हाथ-मुँह धोया। वह मंडी जाने को तैयारी करने लगा। शरबती ने उसे चाय का गिलास थमा दिया। जो भी सब्जी लो थोक के भाव पर लेना।

—ठीक है। —वह चाय पीने लगा।

शरबती ने पति को अच्छी तरह से समझा दिया कि मंडी से उसे क्या-क्या सब्जी लानी है। इसके लिए उसने उसे साठ-सत्तर रूपये भी थमा दिये।



अंटी में रूपये रखकर सुखराम बस में बैठकर सब्जी मंडी चल दिया। लेकिन वहाँ भीड भाड़ को देखकर वह घबरा गया। वहाँ ऊंची बोलियाँ बोलकर सब्जी की खरीद फरोख्त की जा रही थी। वहाँ गंदगी की ऐसा ढेर था कि सांस लेना भी दूभर हो रहा था। एक ओर खड़ा-खड़ा वह देखता ही रह गया। तभी उसके पास भोडू चला आया। उसका हाथ उसके कंधे पर आ लगा, —इधर कैसे?

— पत्नी ने सब्जी मंगवाई है। सुखराम सिर खुजलाने लगा, वो पटरी पर बैठ के सब्जी बेचा करेगी।

—मजदूरी करना छोड़ दिया? —भोडू ने पूछा।

— हाँ तो।—उसने कहा, —वो तो उस जिंदगी से तंग आ चुकी है। कहती है



हम अपने पाँवों पर खड़े होंगे।

—ठीक तो है। भोड़ू उसे उत्साहित करने लगा, वो सब तेरे भले के लिए ही तो कह रही है। उसका कहा मानता चल। इसी में तेरी भलाई है।

—तू अपनी सुना न यार। —सुखराम ने उसकी ओर बीड़ी का बंडल बढ़ा दिया, तेरे क्या हालचाल है?

—मैं एक होटल में काम करता हूँ। —भोड़ू ने बीड़ी सुलगाकर बताया, मेरा काम मंडी से सब्जी लाना, उसे धोना और काटना है।

—ये तो बढ़िया काम है यार।

—अरे भैया! नौकरी तो नौकरी ही होती है।— भोड़ू ने बीड़ी सुलगाकर कहा, अपना व्यापार अपना ही हुआ करता है।

—हाँ तो, सुखराम ने भी उसी की हाँ में हाँ मिला दी। भैये, खरीददारी में मेरी मदद कर न।

वहाँ वे दोनों थोक के भाव पर सब्जियाँ खरीदने लगे। भोड़ू ने कहा, —आलू को तो तू बिना पूछे ही ले लिया कर। यह सब्जियों का राजा होता है। ब्रिक्री भी इसकी खूब होती है।

इस प्रकार सुखराम जब मंडी से बोरियां भरकर सब्जी लाया तो शरबती प्रसन्न हो गई। उसे लगा जैसे कि उनकी गृहस्थी की गाड़ी पटरी पर चलने लगेगी।

दोपहर का भोजन कर शरबती ने पति से कहा—मैं तो सड़क के किनारे पटरी पर सब्जी बेचा करूँगी, तुम क्या करोगे?

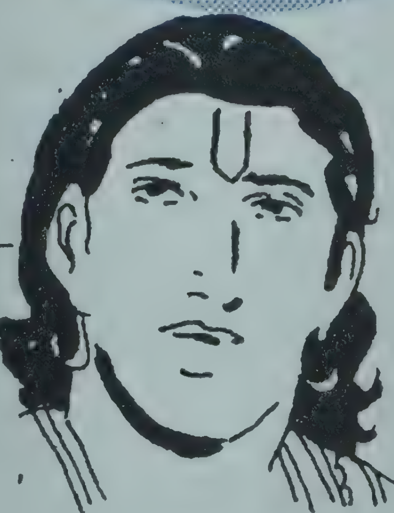
—मैं मजदूरी पर चल दूंगा। —उसने कहा वहीं ठेकेदार के पास।

(शेष पृष्ठ 123 पर)

कविता : ओ.पी. राजकुमार

माँ

कितनी अच्छी कितनी प्यारी—
अपनी माँ होती है,
उसके आशीर्वाद, दुआ से,
प्रगति सदा होती है।
बच्चों के पालन-पोषण का—
काम कठिन होता है कितना
उनके सुख, हित में बेचारी;
भूले जीवन अपना॥





माँ होती है सच्ची साथी,
सदा साथ देती है;
दुःख, संकट के समय सभी को,
'वही' याद आती है॥



होते हैं किस्मत वाले,
जो सेवा माँ की करते;
उसकी ममता के आंचल में,
सदा सुखी वे रहते॥





समाचार

सन्त निरंकारी मिशन अब एन्साइक्लोपीडियो में भी

विश्व की ख्याति प्राप्त सन्दर्भ पुस्तक एन्साइक्लोपीडियो ब्रिटेनिका में अब सन्त निरंकारी मिशन की जानकारी के लिये मुख्य बिन्दुओं के सहारे दो पेज समर्पित किये गये हैं। मिशन के इतिहास, दर्शन व समाज कल्याण की गतिविधियों को पुस्तक के स्टूडैन्टस ब्रिटेनिका इण्डिया के भाग 4 में समाहित किया गया है।

निरंकारी बाबा एवं पूज्य माता जी के चित्र डाक टिकट पर

निरंकारी बाबा जी को सम्मान प्रदर्शित करने के लिये आस्ट्रेलिया की सरकार ने डाक टिकट पर निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी व पूज्या माता सविन्दर कौर जी का चित्र प्रकाशित किया है।

एब्रोमीटर से कई गुना बढ़ाई जा सकती है नजर

दिल्ली के प्रमुख नेत्र विशेषज्ञ डॉ. महीपाल एस. सचदेवा के अनुसार वैज्ञानिकों ने मानव व चील की देखने की क्षमता की तुलना करते हुए एक विश्लेषण प्रस्तुत किया है, जिसके अनुसार चील की आँख की संरचना मनुष्य की नेत्र संरचना से काफी बेहतर है। चील की आँख में प्रवेश करने वाली किरणें बिना बिखरे हुए सीधे दृष्टि पटल पर केन्द्रित हो जाती हैं जिससे बहुत दूर की वस्तु भी बहुत साफ नजर आती है जबकि मनुष्य की आँख में जो किरणें दृष्टि पटल पर पहुँचती हैं उनमें से काफी किरणें दृष्टि पटल पर केन्द्रित होने की बजाय आँख के अन्दर विभिन्न भागों में बिखर जाती हैं जिससे पास की वस्तु का ही सही दृश्य बन पाता है।

इस कमी को दूर करने के लिए वैज्ञानिकों ने एब्रोमीटर नामक यन्त्र बनाया है। एब्रोमीटर, किरणों के पथविचलन (एबरेशन) को नाप लेता है और यह भी पता लगा लेता है कि पथ विचलन आँख के किस-किस क्षेत्र में कितना-कितना है। यह सारी जानकारी कंप्यूटर में दर्ज हो जाती हैं जो कि एक लेसिक मशीन से भी जुड़ा होता है। इस जानकारी के आधार पर लेसिक लेजर विधि से आँख के उन हिस्सों को काट-छाँटकर इस प्रकार का आकार दे दिया जाता है कि आँख के गोलक पर पड़ने वाली रोशनी की हर किरण ठीक दृष्टि पटल पर ही केन्द्रित होती है। इसके परिणामस्वरूप जो चित्र बनता है वह प्राकृतिक क्षमता की अपेक्षा अधिक स्पष्ट तथा खरा होता है।

जॉगिंग के लाभ

डेनमार्क के वैज्ञानिकों द्वारा किये गये एक अनुसंधान अध्ययन के अनुसार जो लोग नियमित जॉगिंग अथवा इसी तरह का कोई प्रभावी व्यायाम करते हैं उनका जीवन ऐसा न करने वालों की तुलना में 7 वर्ष बढ़ जाता है।

उपर्युक्त आशय की अध्ययन रिपोर्ट 'ब्रिटिश मैडिकल जर्नल' में प्रकाशित हुई है।

कोपेनहेगेन के सिटी हार्ट स्टडी के प्रमुख हृदय रोग विशेषज्ञ श्री पीटर स्नोहर के अनुसार अनुसंधान से यह सपष्ट हुआ है कि दीर्घायु के अन्य कारणों में सर्वाधिक लाभकारी कारण धीमी जॉगिंग अच्छी होती है लेकिन लाभकारी होने के लिये इसका थोड़ा हॉफी होना आवश्यक है।

मल्लेश्वरी ने बचायी ओलम्पिक में भारत की नाक

उदीयमान व प्रतिभाशाली भारतीय खिलाड़ी कर्णम मल्लेश्वरी ने पिछले दिनों आस्ट्रेलिया के सिडनी नगर में हुए ओलम्पिक खेलो में एक कांस्य पदक जीतकर भारत की इज्जत रख ली।

खूबियां हैं गेहूं की घास में

गेहूं की घास पर शोध कर रहे वैज्ञानिक प्रभाकर पै के अनुसार उसमें चिकित्सकीय गुणों के साथ ही सौन्दर्यवर्द्धक खुबियां भी मौजूद हैं।

इसके रस को चेहरे पर लगाने से झुर्रियां खत्म होती है। दाग-धब्बे मिट जाते हैं। और चेहरे पर चमक भी आ जाती है। यदि गेहूं के रस को खोपड़ी पर लगाया जाए तो बालों के गिरने और बालों के उम्र से पहले सफेद होने की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। इसके लिए लेप को खोपड़ी पर कम से कम एक घंटे तक लगा रहने देना चाहिये। यदि ये समस्याएं न हों तो भी खोपड़ी पर गेहूं की घास के रस का लेप लगाना फायदा करता है। गेहूं की घास के रस से गरारा करने पर गले की तकलीफें दूर होती देखी गयी हैं। प्राकृतिक चिकित्सकों ने गेहूं की घास के कैप्सूल, गोलियां और तेल आदि भी बनाएं हैं।

प्रशिक्षण मिशन के लिए भारतीय छात्र चुने गये

अमेरिका की पलैनेटरी सोसाइटी ने मंगल ग्रह से सम्बन्धित एक प्रशिक्षण मिशन के लिए दुनिया भर से 9 छात्रो का चयन किया है, जिनमें तीन भारतीय छात्र भी शामिल हैं।

ये विद्यार्थी मंगल ग्रह की कक्षा में घूमने वाले उपग्रह के एक कैमरे को प्रोग्राम करेंगे। इन्हें भविष्य के अंतिरक्ष मिशन के लिए मंगल ग्रह में एक ऐसी जगह भी छाँटनी होगी, जहाँ अंतरिक्ष यान उतर सके। सोसाइटी ने छात्रों के चयन के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित की थी। इसमें 44 देशों के 10 हजार युवाओं ने हिस्सा लिया था। चुने गये भारतीय छात्रों में उदयपुर का 15 वर्षीय शालीन राजेन्द्र हरतालका, नागपुर का 13 वर्षीय संजय किरवाडकर तथा बेंगलूर का 10 वर्षीय विकास सारंगधर शामिल है। चुने हुए शेष विद्यार्थियों में दो हंगरी के तथा अमेरिका, ब्राजील, ताइवान व पोलैण्ड से एक-एक विद्यार्थी हैं।

— हँसती दुनिया संवाददाता राम कुमार सेवक द्वारा

बाल कविता : 'फिगार' बुलन्दशहरी

हिमालय

यह भारत का शौर्य मुकुट,
यह भारत का स्वर्ण धाम,
इस भारत के प्रहरी को,
मेरे कोटि-कोटि प्रणाम।।



बन रक्षक खड़ा अटल—
भारत का दुःख हरने को,
संकट में साथ निभाने को,
काँटों में राहें घड़ने को।।



यहाँ कहीं सरिता मुस्काती,
कहीं सुमन अठखेली करते,
बाँह पसारे शिलाखण्ड से,
झर-झर-झर झरने झरते।।

वीरों की प्रशस्ति यह गाता,
हर सुबह-दोपहर-शाम,
इस भारत के प्रहरी को,
मेरे कोटि-कोटि प्रणाम।।

अनोखा सपना

नन्हीं पर्ली बहुत ही भोली और प्यारी थी। वह अपनी कक्षा में सबसे सुन्दर थी। उसकी अध्यापिका उसे बहुत प्यार करती थी। परन्तु उसकी अक्षरों की गलतियों के कारण उसकी अध्यापिका उससे परेशान रहती थीं। उसकी अध्यापिका उसको हमेशा अक्षरों की बनावट के बारे में सिखाती रहती थी पर उसकी समझ में कुछ न आता।

एक दिन पर्ली रात्रि में अपने शयन-कक्ष में सो रही थी। उसने सपने में देखा कि अचानक ही कमरे में चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश हो गया। वह अचम्भे में पड़ गई। उसने इस अनोखे प्रकाश में से एक अद्भुत परी उसके पलंग की तरफ बढ़ी आ रही है। पर्ली उसको देखकर आश्चर्यचकित हो गई। उस परी के पास पहुँचते ही वह डरकर एक दम बोली—तुम कौन हो?

परी—मैं तुम्हारी दोस्त अक्षरपरी हूँ।

यह सुनकर पर्ली फिर बोली—वही जो अक्षर मैं अपनी कापी में लिखती हूँ।

परी—हाँ पर्ली, मैं उन अक्षरों की ही परी हूँ। पर्ली तुम बहुत अच्छी हो पर मैं जानती हूँ तुम अक्षरों की बहुत गलतियाँ करती हो और तुम्हारी अध्यापिका तुम को इस बात पर खूब डाँटती है।



पर्ली उसकी बात काटते हुए बोली—तुम तो सबकुछ जानती हो और तुम तो भगवान जी जैसी भी लगती हो।

(परी पर्ली के पलंग पर बैठ जाती है और नन्हीं पर्ली को अपनी गोद में ले लेती है।) परी उससे बातें करने लगती है। जब भी कोई मात्रा की गलती करता है तो मेरी पीठ पर बड़े-बड़े घाव हो जाते हैं।

पर्ली —दूध वाले चाचा को तो दूध का भी ज्ञान नहीं है। उन्होंने अपनी दुकान पर दूध का 'दुध' लिखा हुआ है। और बूट वाले अंकल ने 'बुट' लिखा हुआ है।

इस बात को सुनकर अक्षर परी सहम गई फिर उसने कहा—ये बड़े लोग भी अपनी सेल बढ़ाने के लिए एक नई पहचान बना लेते हैं।



पर्ली — तुम उनको कुछ भी नहीं कहती।

परी— मैं उनको भी सीधा करूँगी, तुम देखना। जब कल तुम स्कूल जाओगी तब देखना कि मैंने क्या किया है। तब खूब मज़ा आएगा।

पर्ली —अक्षरपरी परन्तु मेरी गलतियाँ कैसे सुधरेंगी? तुम मुझे बताओ ना! जैसा तुम कहोगी मैं वैसा ही करूँगी।

अक्षर परी —पर्ली तुमको कुछ विशेष करने की आवश्यकता नहीं। मैं तुम्हें वरदान देती हूँ कि तुम्हारी कभी कोई गलती न हो।

यह सुनकर पर्ली की खुशी का ठिकाना न रहा। तब परी पर्ली से विदा लेती हुई चल देती है। पर्ली के कमरे में फिर से अंधेरा हो जाता है।



प्रातःकाल उठकर पर्ली अक्षर परी की कही हुई बात याद आ जाती है और वह जल्दी से स्कूल वर्दी पहनकर दूध वाले चाचा की दुकान पर भाग गई। जहाँ दूध वाले चाचा को बात करने की फुर्सत नहीं थी वहाँ आज बातों का ढेर लगा था। आज कोई भी उनकी दुकान से दूध नहीं ले रहा था। आखिर 'ध' तो किसी को भी नहीं चाहिए होता। उनकी दुकान पर दूध का 'दू' नीचे गिर गया था और 'ध' की दुकान हो गई थी। सामने दूध वाले के पास जहाँ फुर्सत होती थी आज भीड़ लगी थी अचानक यह परिवर्तन देख सभी हैरान थे। तब पर्ली ने उनको बताया कि चाचा जी आपकी दुकान का 'दू' गिरा पड़ा है। सीढ़ी लाकर पर्ली के चाचा ने गलत 'दु' को लगाना चाहा पर वो बार-बार गिरता रहा। एक पार पर्ली के चाचा स्वयं भी गिरे। इस पर सारे लोग हँसने लगे। तब पर्ली चाचा जी को बोली—आप 'दु' की जगह 'दू' को लगाइए। लगाने पर वह एकदम टिक गया और सारी भीड़ दुबारा आ गई। ऐसा ही कुछ 'बुट' वाले अंकल के साथ भी हुआ।

पर्ली उस दिन बहुत खुश थी पर फिर उसने कई बार परी को बुलाना चाहा पर वह फिर कभी भी नहीं आई। ■

भैया से पूछो

> **हँसती दुनिया के 'दादा जी' देख रहे हैं कि हमने क्या सीखा।'प्रश्न' और 'उत्तर' दोनों का सम्बन्ध टूटा तो नहीं। उन्होंने कहा—अब 'भैया से पूछो' नाम से यह स्तम्भ जारी रहेगा।** — ***सम्पादक***

—मला पंकज "पालिया" (हिमाचल)

प्रश्न : अपने मन से ईर्ष्या मिटाने तथा अपने विश्वास को दृढ़ करने के लिए क्या करें?

उत्तर : सत्पुरुषों की संगति।

प्रश्न : अपने से अधिक आयु, व्यवहार कुशल तथा योग्यता वाले से दोस्ती करने से पहले क्या करना या सोचना चाहिए?

उत्तर : अपना आत्मविश्वास कम नहीं होने देना चाहिए।

—सुरेश खुराना 'पप्पी' (दिल्ली)

प्रश्न : हमेशा खुश रहने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर : वर्तमान से सन्तोष।

—नेहा बतरा "रज्जू" (नई दिल्ली)

प्रश्न : दोस्त की दोस्ती पर कब नाज होता है?

उत्तर : जब वह दुख व सुख दोनों में दोस्ती निभाये।

प्रश्न : कर्ज़ और फर्ज़ दोनों को ही लोग भूल क्यों जाते हैं?

उत्तर : भूलते नहीं है; स्वार्थवश ऐसा जाहिर करते हैं।

—सुरेश खुराना 'पप्पी' (नई दिल्ली)

प्रश्न : किसी इन्सान के जीवन का सबसे बड़ा बोझ क्या हो सकता है?

उत्तर : उसकी अपनी गलतियाँ।

—अनमोल अम्बले (चिटगुपा)

प्रश्न : क्या कर्म द्वारा भाग्य बदलता है?

उत्तर : कर्मों का फल ही तो भाग्य कहलाता है।

—कमल नागपाल (खंडवा)

प्रश्न : मन में परोपकार की भावना कैसे जन्म लेती है?

उत्तर : अच्छी संगति से।

प्रश्न : आदमी गुस्से का नाटक कब करता है?

उत्तर : जब नम्रता से बात बनती दिखाई न दे।

प्रश्न : ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करने वाले एवं उससे डरने वाले व्यक्ति क्या अदालत में झूठ नहीं बोलते?

उत्तर : ईश्वर भक्त झूठ नहीं बोलते। हाँ लम्पट व्यक्ति ही ऐसा करते हैं।

—सन्टी पोपली

प्रश्न : सबसे बड़ा पुण्य क्या है?

उत्तर : परहित।

—प्रकाश खत्री (इन्दौर)

प्रश्न : भय को दूर कैसे करें?

उत्तर : अपनी पहचान करके क्योंकि हम प्रभु की सन्तान हैं, यह जानकारी कर लें और प्रभु सर्वशक्तिमान है; फिर भय कैसा?

—प्रकाश खत्री (इन्दौर)

प्रश्न : कहते हैं प्रेम अन्धा होता है। क्या यह सही है?

उत्तर : बिल्कुल सही है। वास्तविक प्रेम आत्मा का विषय है बुद्धि या ज्ञानेन्द्रियों (आँख) का नहीं।

—नेहा बतरा "रज्जू" (नई दिल्ली) सुल्तान (पानीपत) व शमा (आगरा)

प्रश्न : लोग धर्म से अधिक दौलत को क्यों मानते हैं?

उत्तर : माया की चमक अधिक होती है। इसलिये उसका असर कमज़ोर आदमी पर जल्दी हो जाता है।

प्रश्न : झूठ की जीत कब होती है?

उत्तर : पहले झूठ ही जीतता है परन्तु अन्तिम विजय सत्य की होती है।

—सुरेश खुराना 'पप्पी' (दिल्ली)

प्रश्न : आज का इन्सान इन्सानियत और शराफत से दूर क्यों भागता है?

उत्तर : अज्ञान के कारण।

—राकेश मसुरकर (मंडला)

प्रश्न : इन्सान महान कैसे बनता है?

उत्तर : महापुरुषों व सन्तों की संगति करने से।

प्रेरक कथा : ईलू रानी

मन के भाव



एक दिन एक सन्त से कुछ भक्तों ने कहा—हम प्रतिदिन मंदिर जाते है। वहाँ भगवान की पूजा करते हैं। लेकिन फिर भी हमें पूजा का कोई फल नहीं मिल रहा है। इसका मतलब हम पहले भी गरीब थे, और आज भी हैं।

सन्त ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—मेरे भाईयों! तुम मंदिर में भगवान की पूजा करते समय मंदिर का धोती दुपट्टा मंदिर के द्रव्य मंदिर की पूजा की पुस्तक, भाषा वर्ग के शब्द का उपयोग करते हो। तुम्हारा इसमें क्या लगा? सिर्फ भाव तुम्हारे थे, सो उनकी तरफ ध्यान ही नहीं जाता फिर फल तुम्हें पूजा का कैसे मिलेगा। अपने भाव को तो परमात्मा के स्वरूप में लगाओ तो कुछ लाभ भी होगा, अन्यथा क्या मिलने वाला है।

सुनकर सभी भक्तगण निरुत्तर हो गये। भक्तगण मन ही मन समझ चुके थे। ईश्वर की पूजा के वक्त अपने भावों को सच्चे रखना चाहिए ताकि ईश्वर भी सच्चे भाव से प्रसन्न होकर कुछ भला कर सके। ●

सितम्बर अंक रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम : गौरव सक्सेना (आयु 12 वर्ष)
लटूरिया महाराज आश्रम
बरेली रोड, हल्द्वानी

द्वितीय : चेतन अरोरा (आयु 11 वर्ष)
सेक्टर-27, नोएडा
(रायगढ़)

तृतीय : अनस अफजाल (आयु 8 वर्ष)
गढ़ी नवाब नयामत खाँ पूर्व
फर्रूखाबाद

इन बच्चों को हँसती दुनिया की ओर से पुरस्कार भेजा जा रहा है।

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसन्द किया गया वे हैं —

तूलिका गुप्ता (कानपुर), ललिता देवी (बरोना, सोनीपत), अरविन्दर कौर (जालन्धर), काव्य अंकुर सिन्हा (अकलतरा, बिलासपुर), ईशान सूद (ठियोग, शिमला), समनीत सिंह (उत्तम नगर), नई दिल्ली), प्रियंशिका (नैनी इलाहाबाद) भारती जगमलानी (अमलनेर, जलगाँव), शगुन (बिलासपुर), आलिशा दुग्गल (पालम, नई दिल्ली), गौतम विश्वकर्मा (जौनपुर)

नवम्बर अंक की रंग भरो प्रतियोगिता

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है । इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भर कर 15 दिसम्बर तक **सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009** को भेज दें । तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जायेंगे।

पुरस्कारों की घोषणा हँसती दुनिया के जनवरी 2001 अंक में की जायेगी । चित्र के नीचे दिये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ-साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं।

पुरस्कारों के विषय में 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का फैसला अन्तिम और मान्य होगा ।

रंग भरो



नाम .... आयु ....

पूरा पता ....

....

....

.... पिन कोड ....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। नवम्बर 2000 तक इसका वार्षिक शुल्क मात्र 30/- रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 300/- रुपये हैं। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/ बैंक ड्राफ्ट/ पोस्टल आर्डर आदि द्वारा भेज सकते हैं —

अध्यक्ष,

(पत्रिका विभाग)

सन्त निरंकारी मण्डल

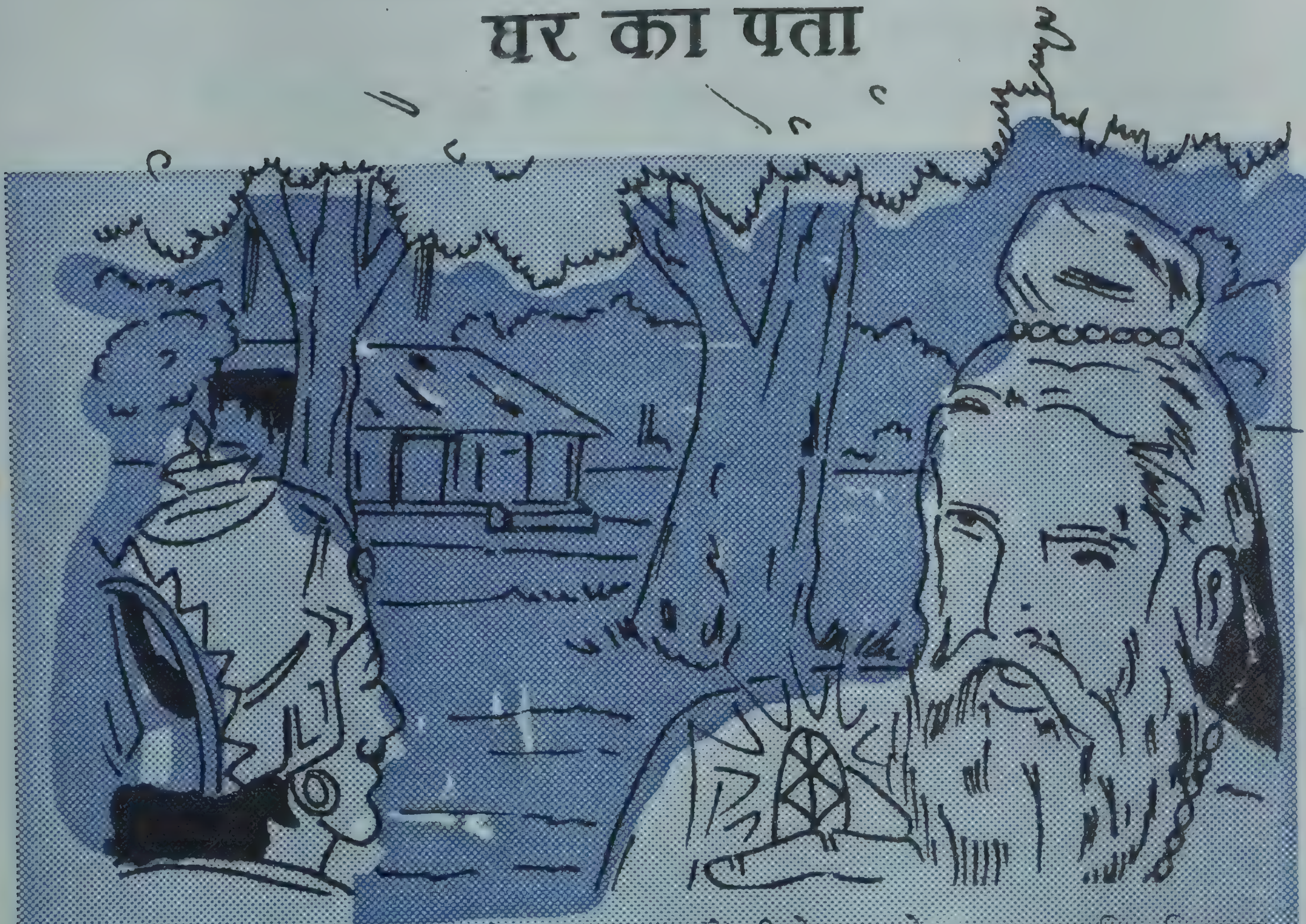
सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

नोट : पोस्टल आर्डर /ड्राफ्ट आदि सन्त निरंकारी मणडल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ-साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या. भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें।
- यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।

कहानीः प्रेमनाथ लखनपाल

घर का पता



एक राजा था। बहुत दानी तथा साधु पुरुषों की सेवा करने वाला। एक दिन शिकार के लिए निकला तो वन में रास्ते से भटक गया। भूखा-प्यासा जंगल में भटक रहा था; अचानक एक साधु की कुटिया उसे दिखाई दी। मन में धीरज बंधा तथा उस ओर घोड़ा मोड़ लिया। वहाँ पहुँचकर साधु महात्मा को प्रणाम कर बैठ गया तथा बोला—मुनिवर, आपने शायद मुझे पहचाना नहीं, मैं अमुक देश का राजा हूँ।

फकीर हँस दिया कहने लगा— जंगलों में तो साधु फकीर रहते हैं। यदि तू राजा है तो यहाँ क्या करने आया है? जाकर महलों में आराम से बैठ।

राजा को भूख तथा प्यास सता रही थी। इसलिए साधु से कुछ देने को कहा। साधु ने उसको भोजन करवाया तथा पानी पिलाया। पेट भर गया तो राजा के मन का सोया अहंकार फिर जाग पड़ा तथा साधु से बोला—तुमने मेरी सेवा की है। इसलिये यह हीरा रख ले; इसे बेचकर सुख का जीवन व्यतीत करना।

साधु बोला—यह हीरा मेरे किसी काम का नहीं है इसलिए इसे आप साथ ले जाएं।

राजा अपने अहंकार वश कहने लगा—तू फकीर है। इसलिए तुझे इसका मूल्य नहीं मालूम तथा मूर्खतावश इसे नहीं ले रहा। हम भी दिया दान वापस नहीं लेते। इसलिए रख लें अन्यथा यदि तुम्हें कोई तुझ से भी अधिक मूर्ख मिले तो उसे यह हीरा दे देना।

समय निकलता गया। कुछ समय पश्चात साधु को पता चला कि वह राजा बहुत बीमार है तथा मरण शैय्या पर है तो वह राजा से अन्तिम बार कुशलक्षेम पूछने चला आया। जब साधु ने राजा की यह हालत देखी तो उससे पूछा—क्या आपने मुझे पहचाना।

राजा—हाँ , आपने एक बार जंगल में हमें अन्न जल देकर हमारी जान बचाई थी।

साधु—राजन! अब तो आप मृत्यु-शैय्या पर हैं यह तो बताइए कि यह शरीर (पाँच तत्व) छोड़कर आप को कहाँ जाना है।



राजा : महात्मन! इस बात का मुझे पता नहीं है।

साधु : अच्छा फिर इतना तो बता दो कि तुम आए कहाँ से थे?

राजा : बाबा! मुझे तो इस बात का भी ज्ञान नहीं कि कहाँ से मैं आया था।

यह बात सुनकर साधु महात्मा ने वह हीरा जो राजा ने उसे दिया था। यह कहकर राजा को थमा दिया कि इसे रख लो क्योंकि राजा होते हुए भी तू ही सबसे अधिक मूर्ख है। जिसे न आने का पता है न जाने का। यही तुम्हारी शर्त थी।

राजा शर्मिन्दा था। उसे कुछ नहीं सूझा। उसने महात्मा को श्रद्धा से शीश झुकाया। महात्मा ने आशीर्वाद दिया व उस दिन के बाद राजा कुछ ठीक होने लगा। ■

कहानी : डॉ. हूंदराज बलवाणी

ऐसा भी होता है

प्रशान्त नाम के लड़के पर धुन सवार हुई कि कोई अच्छा-सा काम कर दिखाऊँ



और अपना नाम रोशन करूँ।

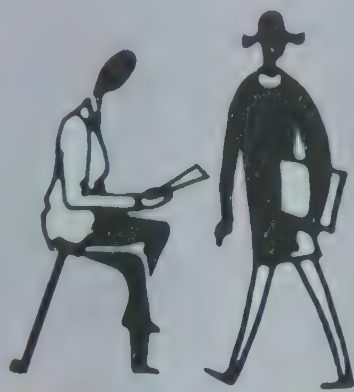
एक दिन प्रशान्त अपने घर से निकला तो किसी मकान के बाहर एक छोटे से बच्चे को खड़ा देखा। मकान का दरवाजा बंद था। प्रशान्त ने सोचा कि यह बेचारा शायद दरवाजे की घंटी तक नहीं पहुँच सकता इसकी मदद करनी चाहिए।

प्रशान्त ने बच्चे को कहा, चिन्ता मत कर मैं अभी दरवाजा खुलवाता हूँ। ऐसा कहकर उसने दरवाजे के बाहर लगी हुई घंटी बजाई—ट्रिन...ट्रिन..ट्रिन। थोड़ी ही देर में घर के मालिक ने आकर दरवाजा खोला। प्रशान्त को खड़ा देखकर वह बरस पड़ा—घंटी धीरे से नहीं बजा सकते?

प्रशान्त कुछ कहे इससे पहले उस आदमी ने फिर कहा , बोल क्या काम है?

उत्तर देने से पहले प्रशान्त ने उस छोटे से बच्चे को देखा जिसकी वह मदद करने के लिए उसने दरवाजा खुलवाया था पर वह तो वहाँ था ही नहीं। दरवाजा खुलने से पहले ही वह बच्चा वहाँ से खिसक गया था। अब प्रशान्त क्या उत्तर दे?

घर के मालिक ने उसे डांटते हुए कहा, शर्म नहीं आती, दूसरों के घरों की घंटिया बजाते फिरते हो और उसने जोर से दरवाजा बन्द कर दिया।



प्रशान्त को काटो तो खून नहीं। अच्छा काम करके नाम कमाने का एक मौका हाथ से यों निकल गया और डांट पड़ी सो अलग।

दूसरे दिन प्रशान्त बाजार जा रहा था तब उसने देखा कि एक आदमी एक दुकान के बाहर काँच के कबाट में रखी हुई चीजें देख रहा था उसी समय अचानक एक गाय तेजी से उस आदमी की ओर आ रही थी आदमी की पीठ गाय की तरफ थी। प्रशान्त को लगा कि कहीं यह गाय उस आदमी को सींग न मार दे कुछ करना चाहिए। और तब वह दौड़ने लगा। उस आदमी के पास पहुँचकर प्रशान्त ने उसे हटा दिया। आदमी गिरते-गिरते बच गया। वह प्रशान्त पर गुस्सा हुआ और बोला, मुझे धक्का क्यों दिया?

प्रशान्त ने नम्रता से कहा—वह गाय आपकी ओर दौड़ती हुई आ रही थी इसलिए।

—इसलिए ऐसे धक्का देते हैं? और वह आदमी प्रशान्त को मारने के लिए आगे बढ़ा। पर कुछ लोगों ने बीच बचाव करके प्रशान्त को बचा दिया। इस तरह प्रशान्त मार खाने से बच गया।

इन दो दिनों में किए गए भलाई के कामों से प्रशान्त बहुत निराश हुआ। उसे दुःख होने लगा कि लोग उसे भलाई का बदला ऐसा क्यों दे रहे हैं? फिर भी उसने

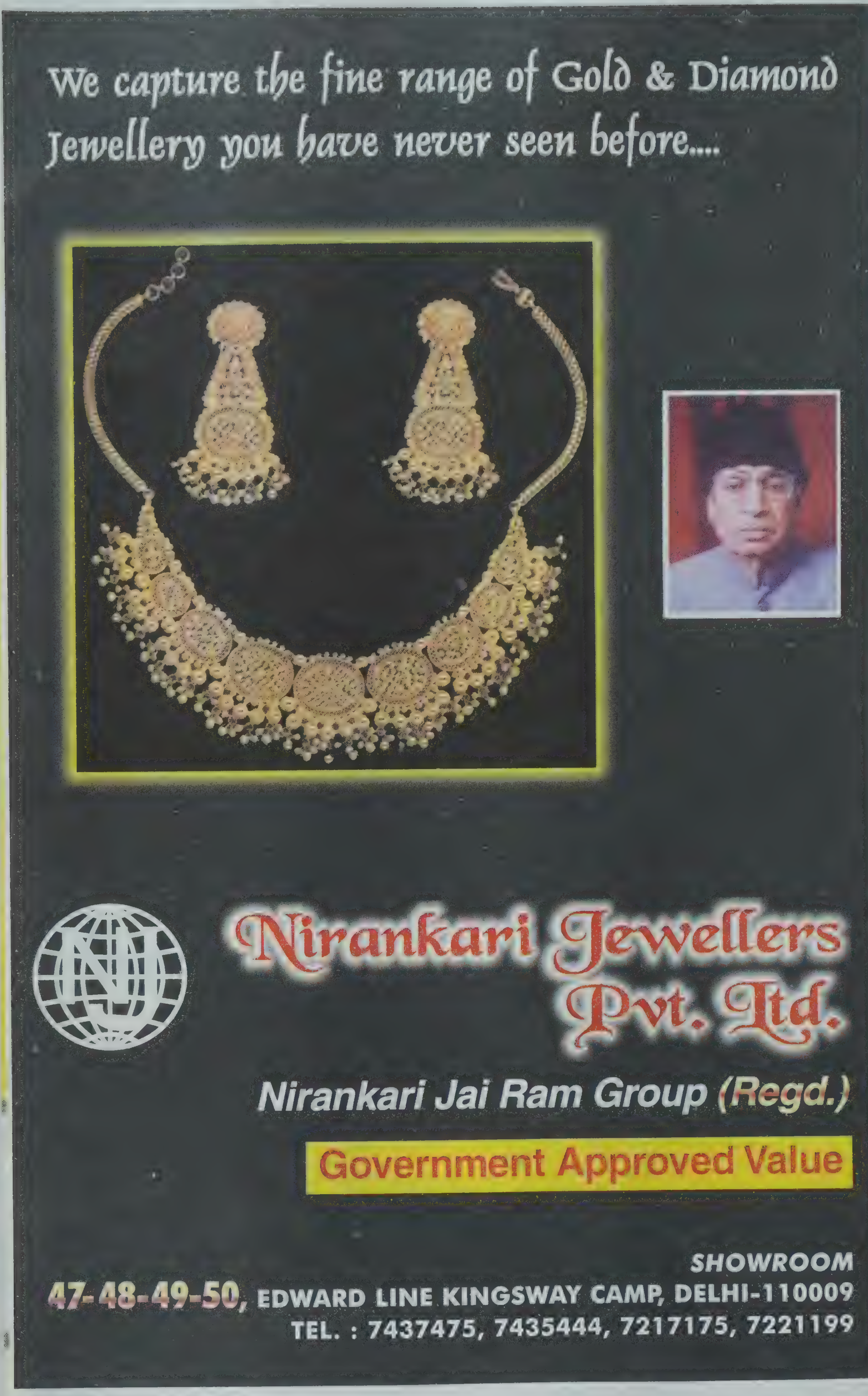




हिम्मत न हारी। उसने निश्चय कर लिया कि कुछ भी हो वह अच्छे काम करना नहीं छोड़ेगा।

दो तीन दिन बीत गए। एक दिन दोपहर को प्रशान्त स्कूल से वापस आ रहा था। तब कहीं से उसे बचाओ-बचाओ की आवाजें सुनाई दीं। उसने रोड के आगे-पीछे देखा पर दोपहर की सख्त गर्मी के कारण उसे रोड पर कोई दिखाई नहीं दिया। प्रशान्त को लगा कि जरूर कुछ गड़बड़ है। वह कुछ समय वहाँ खड़ा रहा। पास में एक बैंक था। उसने देखा कि बैंक के बाहर एक कार खड़ी है और बैंक से बचाओ...बचाओ की आवाजें आ रही हैं। प्रशान्त ने अपने पिताजी से बैंकों के लुटने के समाचार सुने थे। अतः समझ गया कि जरूर कुछ लुटेरे बैंक को लूटने आए होंगे और बैंक के कर्मचारियों को एक कमरे बन्द कर दिया होगा। उसने तुरन्त ही कुछ करना चाहा। उस




We capture the fine range of Gold & Diamond Jewellery you have never seen before....
NJ
Nirankari Jewellers Pvt. Ltd.
Nirankari Jai Ram Group (Regd.)
Government Approved Value
SHOWROOM
47-48-49-50, EDWARD LINE KINGSWAY CAMP, DELHI-110009
TEL. : 7437475, 7435444, 7217175, 7221199

समय प्रशान्त को एक स्कूटर वाला दिखाई दिया। बिना समय गंवाए प्रशान्त रोड के बीचोबीच आ गया। स्कूटर वाले को उसने रुकने का इशारा किया। स्कूटर वाला खड़ा रहा तो प्रशान्त बोला, अंकल, अंकल पास वाले बैंक से बचाओ...बचाओ की आवाजें आ रहीं हैं। जरूर कुछ गड़बड़ है।

अच्छा फिर तो कुछ करना चाहिए। स्कूटर वाला जोर-जोर से चिल्लाने लगा, पकड़ो...पकड़ो।

कुछ ही देर में लोग इकट्ठे होने लगे और हर तरफ से पकड़ो-पकड़ो का शोर सुनाई देने लगा।



तब लोगों ने देखा कि लुटेरे एक बड़ा थैला लेकर बैंक से निकलकर भागने लगे। लोगों ने उन पर पत्थरों की बौछार लगा दी। लुटेरे भयभीत होकर और तेजी से भागने लगे। भागते-भागते उनके हाथों से थैला गिर गया जिसमें बैंक से चुराए हुए रुपए थे। इस बीच किसी ने पुलिस को भी सूचित कर दिया था। अतः वह भी आ पहुँची।

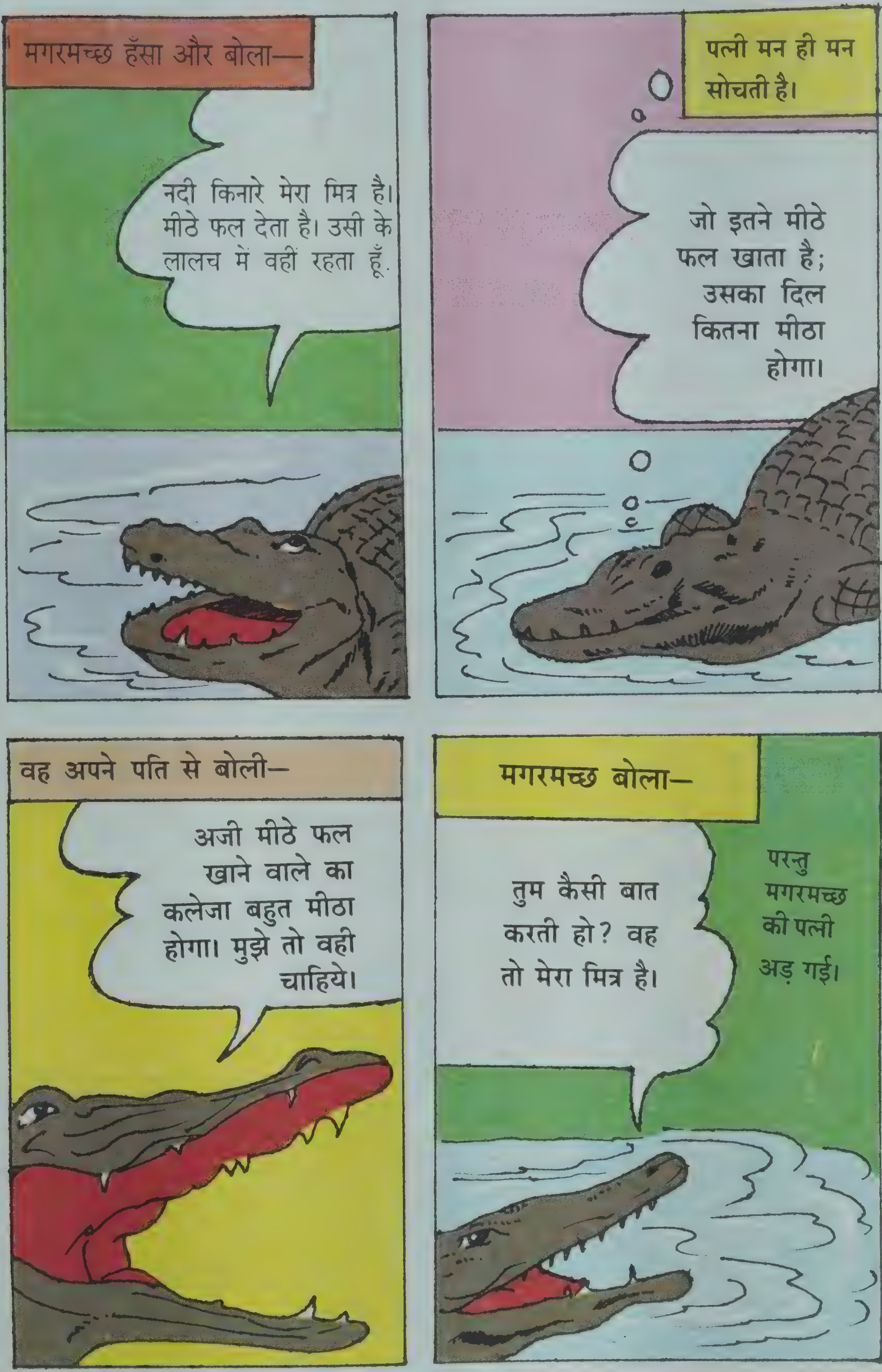
पुलिस और लोगों को जब पता चला कि प्रशान्त की समयोचित सूझबूझ और हिम्मत की वजह से बैंक लुटने से बच गया तो वे उसकी प्रशंसा करने लगे।

दूसरे दिन सभी अखबारों में उस घटना के समाचार के साथ प्रशान्त का फोटो भी छपा था। अखबार में यह भी छपा था कि सरकार की ओर से प्रशान्त को एक बड़ा इनाम दिया जाएगा। यूं हुआ प्रशान्त का नाम रोशन। ●

मास्टरजी


बच्चो—आज तुम्हें बन्दर और मगरमच्छ की कहानी सुनाता हूँ
जी मास्टर जी


एक मगरमच्छ ने बन्दर से दोस्ती कर ली। एक दिन नदी किनारे आम के पेड़ से आम तोड़कर बन्दर ने मित्र को दिया। मगर को आम स्वाद लगा। अब मगर बन्दर के पास अधिक समय बिताता।
एक दिन ...मगर की पत्नी ने कहा— आप अधिक समय कहाँ बिताते हैं।



मगरमच्छ हँसा और बोला—
नदी किनारे मेरा मित्र है। मीठे फल देता है। उसी के लालच में वहीं रहता हूँ.
पत्नी मन ही मन सोचती है।
जो इतने मीठे फल खाता है; उसका दिल कितना मीठा होगा।
वह अपने पति से बोली—
अजी मीठे फल खाने वाले का कलेजा बहुत मीठा होगा। मुझे तो वही चाहिये।
मगरमच्छ बोला—
तुम कैसी बात करती हो? वह तो मेरा मित्र है।
परन्तु मगरमच्छ की पत्नी अड़ गई।


मगर अपने मित्र के पास आया। आज वह उदास था। फिर भी बोला–
भैया! मेरी पत्नी ने तुम्हें बुलाया है।
मैं पानी में कैसे जा सकता हूँ?
मगर ने उसकी वह समस्या सुलझा दी–
तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें ले चलूँगा।


मगरमच्छ की बात मानकर बन्दर उसकी पीठ पर बैठ गया।
असल में तुम्हारी भाभी तुम्हारा मीठा कलेजा खाना चाहती है।
बन्दर ने चतुराई से काम लिया। उसने कहा–
मित्र! हम तो पेड़ों पर उछलते रहते हैं। कलेजा साथ में नहीं रखते; पहले बताते तो कलेजा साथ ले आता, चलो वापस चलो, हम कलेजा लेकर आते हैं।
मूर्ख मगर उसे लिये किनारे पर आ गया किनारा आते ही बन्दर पेड़ पर जा चढ़ा। मगर देखता ही रह गया।
तो बच्चों हमें इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है।
मुसीबत के समय घबराना नहीं चाहिये। हमें हिम्मत व चतुराई से काम लेना चाहिए।



प्यारी दुनिया



न्यारी दुनिया



कहानी : चन्दरभान निरंकारी

वास्तविक कौन?



कन्फ्युशियस एक वृक्ष के नीचे बैठे थे। तभी सम्राट उधर से गुजरे। उन्होंने प्रश्न किया— तुम कौन हो?

कन्फ्युशियस ने उत्तर दिया— जी मैं सम्राट हूँ।

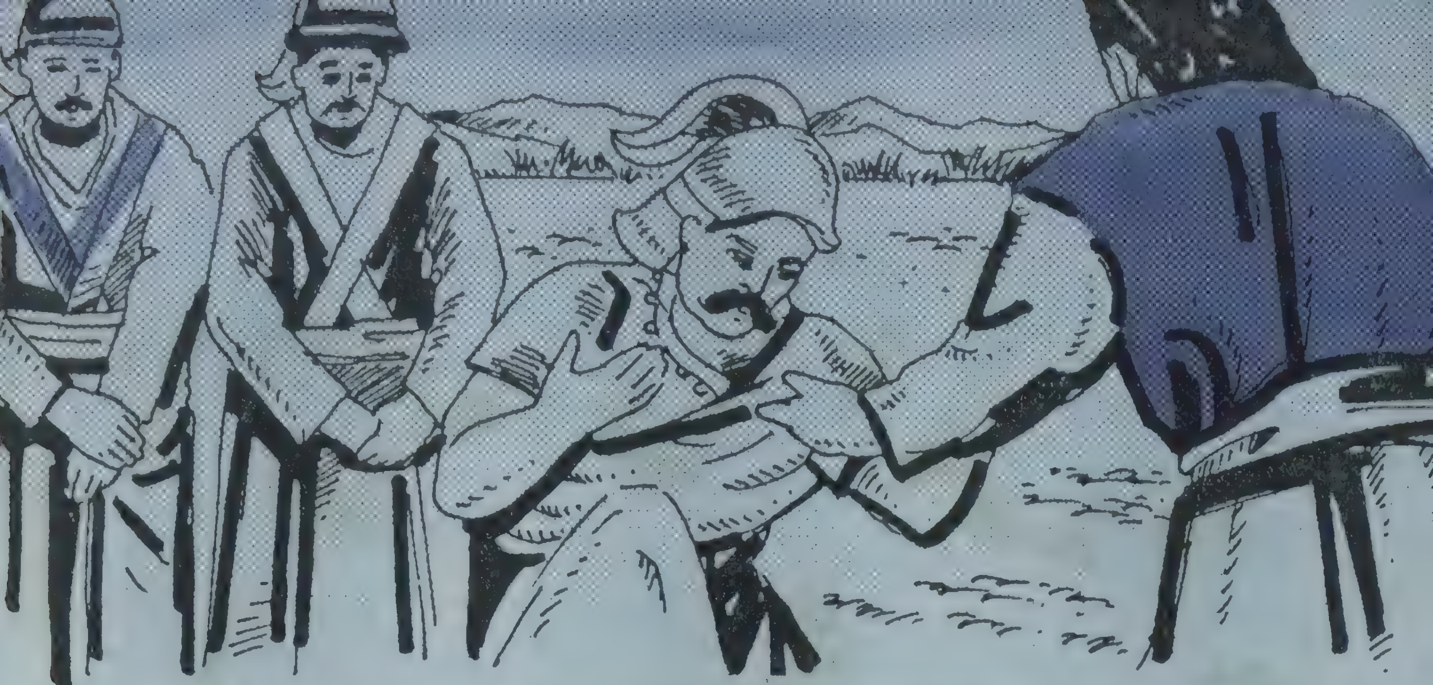
अजी सम्राट तो वह होता है जिसके पास धन-दौलत और नौकर-चाकर हो—सम्राट ने कहा।

कन्फ्युशियस ने जवाब दिया—नौकर तो उनको चाहिए जो आलस्य से घिरे हों हमें नौकरों की कोई जरूरत नहीं है।

सम्राट तब बोले—क्या तुम्हारे पास सैन्यबल है? उसके बिना तो कोई सम्राट हो ही नहीं सकता।

कन्फ्युशियस ने कहा— सैन्य बल तो उन्हें चाहिए जिसके शत्रु हों; इस विश्व में मेरा अपना कोई शत्रु नहीं है। अतएव मुझे उसकी कोई जरूरत नहीं है।

सम्राट ने फिर प्रश्न किया— तुम्हारे पास धन-दौलत कितना है?



कन्फ्युशियस ने कहा— धन-दौलत की आवश्यकता उसे है जो दरिद्र है। मैं दरिद्र नहीं हूँ। मुझे उसकी भी कोई जरूरत नहीं है।

सम्राट ने कहा—तुम्हारा वस्त्र सुन्दर नहीं है।

कन्फ्युशियस बोले—सुन्दर वस्त्र की जरूरत उसे होती है जो कुरूप हो। वे अपनी कुरूपता को छिपाने के लिए सुन्दर वस्त्र पहनते हैं। मेरा रूप स्वरूप अति सुन्दर है और मन भी सुन्दर है।

तब सम्राट उस महान दार्शनिक कन्फ्युशियस के पैरों पर गिर पड़े और बोले— आप ही सच्चे व वास्तविक सम्राट हैं। ●

महानता किनकी?

दादा जी सदा श्वेत कुर्ता व श्वेत पायजामा ही पहनते थे। चाहे कैसा भी अवसर क्यों न हो। एक बार कई लोग मिलकर एक समारोह में जा रहे थे। उन्होंने दादा जी को भी साथ चलने को कहा। दादा जी तैयार हो गये। एक गाड़ी (लम्बी कार) में सवार होकर सभी लोग समारोह की ओर चल दिये। सभी लोग दादा जी के ही पास बैठना चाहते थे। उनमें से एक ने अचानक कहा— दादा जी, आज तो बहुत बड़ी पार्टी है। सर्दियों के दिन हैं, आप आज तो सूट-बूट व टाई लगा लेते।

दादा जी, तपाक से बोले— बेटा, तुम्हारे सूट-बूट व टाई से अधिक मेरे कुर्ते-पायजामें की शान होगी। इतने में समारोह स्थल आ गया। गाड़ी का दरवाजा खुलते ही वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने सर्वप्रथम दादा जी का ही स्वागत किया। समारोह में भी दादा जी ही आकर्षण का केन्द्र थे। दादा जी ने उसी नौजवान को इशारे से पूछा— कहो, कौन जीता?

— वास्तव में महानता गुणों की होती है वस्त्रों की नहीं।

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

लालच का फल

झींगू और ढींगू चूहों में गहरी दोस्ती थी। दोनों एक ही घने बरगद के पेड़ तले एक बिल में रहते थे। झींगू बहुत ही शान्त स्वभाव का और नियम का पक्का था जबकि ढींगू गुस्सैल और लालची था।

कभी झींगू ढींगू के लिए ताजा अखरोट ढूंढ़ कर लाता तो कभी ढींगू दानेदार मूंगफली झींगू के लिए लाता। मुसीबत के समय भी दोनों एक-दूसरे की मदद करते। ढींगू के गुस्सैल और लालची स्वभाव से झींगू बहुत दुःखी रहता। वह ढींगू चूहे को समझाने की बड़ी कोशिश कर चुका था।

एक शाम जब दोनों अपने बिल में में लौटे तो ढींगू चूहे के पेट में जोर से दर्द हो गया था। हुआ यूं कि सुबह जब ढींगू भोजन की तलाश में पास के खेत की तरफ गया तो उसे वहाँ मूँगफलियों का ढेर दिखाई दिया।

बस, फिर क्या था। ढींगू खेत में उतर गया और लालची स्वभाव होने के कारण भूख से कहीं ज्यादा मूँगफलियाँ खा गया। मूँगफली पचने में भारी होती है। इसलिए



शाम को उसके पेट में दर्द होने लगा। रातभर वह दर्द से कराहता रहा।

सवेरा हुआ तो झींकू बोला— आज हम भोजन की तलाश में दूर-दूर तक नहीं जाएंगे। तुम कुछ देर तक आराम करो। मैं तुम्हारे लिए खिचड़ी पकाऊँगा; हल्का खाना खाने से पेट ठीक हो जाएगा।

झींगू ने बड़ी मेहनत से खिचड़ी बनाने का सामान जुटाया। गुलगुल गिलहरी से दाल ली। चिम्पू खरगोश से नमक व घी मंगवाया। भोलू कबूतर ने बर्तन दिये और मुनिया मुर्गी आग ले आई। चावल उनके बिल में पहले से ही रखे हुए थे। झींगू चूहा पास की नदी से पानी ले आया। बड़ी मेहनत से खिचड़ी बनाई।

जब खिचड़ी बनकर तैयार हो गई तो झींगू ने ढींगू से कहा—मैं नहाने जा रहा हूँ। लौटकर दोनों साथ-साथ खिचड़ी खाएंगे। तब तक तू आराम कर।

झींगू नहाने चला गया तो ढींगू ने सोचा— झींगू तो देर से वापस आएगा तब तक मैं थोड़ी-सी खिचड़ी चखकर देख लूँ कि कैसी बनी है। खिचड़ी चखी तो वह उसे बहुत स्वादिष्ट लगी। उसने थोड़ी-सी और खा ली। पर वह था बहुत लालची थोड़ी-थोड़ी करके वह अपने हिस्से की सारी खिचड़ी खा गया।

फिर भी उसका मन नहीं भरा तो उसने झींगू के हिस्से की खिचड़ी भी खा ली। उसका पेट तो पहले ही खराब था। अब जो उसने इतनी सारी खिचड़ी अकेले ही खा ली तो उसका पेट फूलने लगा। वह दर्द से तड़पने लगा।





झींगू चूहा जब नहाकर लौटा तो ढींगू को तड़पता हुआ पाया। उसने आव देखा न ताव झट से जंगल के डाक्टर पूसी बिल्ली को बुलाने दौड़ पड़ा। वह खिचड़ी वाली बात ही भूल गया था।

ढींगू ने तड़पते हुए ही ढेर सारा पानी और पी लिया। पानी पीया ही था कि उसका पेट एकदम से फट गया और ढींगू चूहा वहीं ढेर हो गया।

झींगू चूहा जब डॉ. पूसी बिल्ली को लेकर आया और उसने ढींगू का यह हाल देखा तो उसकी आँखों में दुःख के आँसू भर आए। वह सोच रहा था 'ढींगू लालच न करता और मेरे हिस्से की खिचड़ी न खाता तो उसका यह हाल न होता।' ●

कविता : दिनेश राय

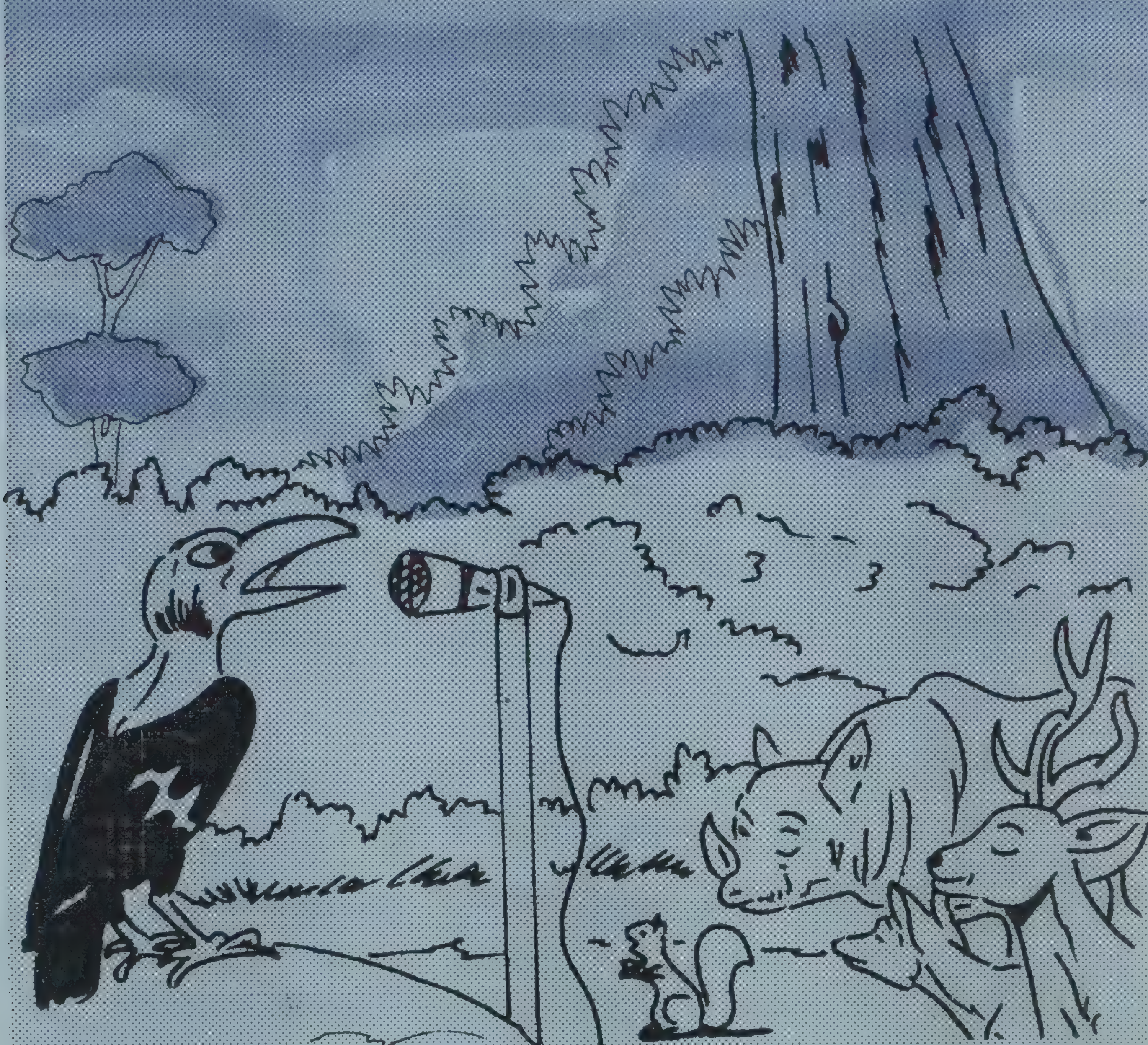
जोशी जी (दादा जी)

दादा के उत्तर, आते थे रास।
खत्म होती थी प्रश्नों की प्यास।

लगा के रखते थे हम आस,
हँसती दुनिया की हर मास।
ब्रह्मज्ञान था उनके पास,
सद्गुरु में करते विश्वास।

मन की उलझन करते नाश,
ऐसे गुण उनमें थे खास।।
सफल हो जीवन की हर श्वास,
पदचिन्ह पर चल पाएं काश।।

हम एक हैं



काँव-काँव! सुनो जंगल के वासियो! सुनो एक जरूरी एलान। कुछ मनुष्यों ने हम पर हमला करने के लिए जंगल के बाहर डेरा डाला है। इस समस्या से निपटने के लिए महाराज ने आपातकालीन बैठक बुलायी है। सभी लोग जल्द से जल्द बैठक गृह में पहुँचे। काँव-काँव!

चिंपू खरगोश ने कालिया कौए की जब यह घोषणा सुनी, तो उसके कान खड़े हो गये और वह अपनी गुफा के बाहर आ गया। उस समय तक आधी रात बीत चुकी थी और चाँद बिल्कुल सर की सीध में चमक रहा था तथा तमाम जानवर एक ओर भागे जा रहे थे। चिम्पू भी अपने आपको ज्यादा देर तक रोक न सका और उस भीड़ में शामिल हो गया।

जंगल के बीचो-बीच पेड़ों और झाड़ियों से घिरा एक छोटा-सा मैदान था, जिसे जंगल के जानवर बैठक गृह के रूप में इस्तेमाल करते थे। वहाँ लगभग सभी पशु-पक्षी एकत्रित हो चुके थे। पक्षी पेड़ों की डालियों पर तथा जानवर जमीन पर पंक्तिबद्ध होकर बैठे थे। जानवरों के सामने एक बड़ी-सी चट्टान पर उनका राजा शेर भी विराजमान था। इन जानवरों के अलावा कुछ लोगों को वनराज ने वन की सीमा पर तैनात कर रखा था, जो शिकारियों पर बराबर नजर रखे हुए थे। शेर ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा—प्यारे जंगलवासियों! आप लोगों को यह तो मालूम हो ही गया होगा कि कुछ मनुष्यों ने हमारा शिकार करने के लिए जंगल के बाहर डेरा डाला है। पर हम उनके नापाक इरादे कभी पूरे नहीं होने देंगे। हम उन्हें ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। क्यों साथियों, क्या मर्जी है आप लोगों की?

—हम लोग तैयार हैं—सभी जानवर एक साथ बोले।

अचानक वहाँ पर गाने का स्वर गूँजने लगे—आवाज दो हम एक हैं, हम एक हैं।

—कौन बदतमीज है, जो ये बेसुरा राग अलाप रहा है?—राजा एकदम से दहाड़ा।

सभा के मध्य में चीकू बन्दर धीरे से खड़ा हो गया। उसके इस गाने में बहुत बड़ा जादू है। इसी गाने के बल पर निहत्थे मनुष्यों ने बहुत सी लड़ाइयाँ जीती हैं। यदि हम ...।



—हूँ, तुम ठीक कहते हो— चीकू की बात काटता हुआ शेर दहाड़ा—हम भी देखेंगे आज इसका जादू। बोलो साथियों हम सब एक हैं।

और फिर पूरा जंगल—हम एक हैं के गान से गूँज गया। तभी एक बाज वहाँ उड़ता हुआ आया और पेड़ की डाल पर बैठ गया। शेर को अभिवादन करने के पश्चात् वह बोला—महाराज शिकारियों को खदेड़ने का यह अच्छा अवसर है क्योंकि वे सभी खा-पीकर सो गये हैं। पहरे पर सिर्फ दो शिकारी ही बैठे हैं और नींद ने उन्हें भी बुरी तरह से अपने चंगुल में जकड़ रखा है।

—वाह, ये तो बहुत अच्छी खबर है—प्रसन्न होता हुआ शेर बोला—अब पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सारा काम होगा। सबसे पहले सफाया दल हमारे लिए रास्ता बनाएगा; उसके बाद आक्रमणकारी दल उन्हें मार भगाएगा। हम सारा काम बड़ी होशियारी और योजनाबद्ध तरीके से करेंगे। हम नहीं चाहते कि किसी की वजह से हमारे काम में कोई बाधा पड़े। इसलिए मेरा अन्य तमाम लोगों से निवेदन है कि वे अपने-अपने स्थान को शान्तिपूर्वक लौट जाएं। उसी के साथ वह सभा समाप्त हो गयी और सभी अपने-अपने रास्ते पर आगे बढ़ गये।

उधर शिकारियों के कैम्प में एकदम नीरवता छायी हुई थी। टैंट के दोनों ओर के मुहानों से थोड़ी दूरी पर जल रही आग एकदम बुझने के कगार पर थी। उसके पास बैठे पहरेदार भी बुरी तरह से ऊंघ रहे थे और उनकी बंदूकें बगल में पड़ी थीं।

टैंट के अन्दर लेटे आठ-नौ लोग अपनी पहली नींद पूरी कर रहे थे। वहीं पर एक कोने में दो बड़े बक्से भी रखे हुए थे, जिनमें से एक में खाने-पीने तथा दूसरे में शिकार के सामान थे। जैसे ही आसमान में चमकता हुआ चाँद बादलों की ओट में हुआ, एक बड़ा सा साया जंगल से निकलकर शिकारियों के टैंट की ओर चल पड़ा। उनका एक-एक कदम बिल्कुल सधा हुआ और संयत था, जिससे ज़मीन पर पड़ा हुआ पत्ता भी न खटक पाये। टैंट के पास पहुँचकर वो लोग दो गुटों में बंट गये और अंधेरे का फायदा उठाते हुए दोनों साए पहरेदारों की तरफ बढ़े। वे साए और कोई नहीं बल्कि चालाक वनमानुष थे। दोनों ने बड़ी फुर्ती से पहरेदारों के हथियार अपने कब्जे में ले लिए। फिर एक वनमानुष टैंट के अन्दर रखे बक्सों के पास जा बैठा



और दूसरे ने जंगल की तरफ इशारा करके रास्ता साफ होने का इशारा कर दिया।

फिर क्या था? जंगल के राजा शेर के नेतृत्व में पूरी सेना शिकारियों के कैंप की ओर दौड़ पड़ी और देखते ही देखते उन्होंने शिकारियों को घेर लिया। पहरेदारों तक को इस कार्यवाही की भनक न लगी और वे मजे से सोते रहे। तभी एक हाथी ने आगे बढ़कर पूरा टैंट उखाड़ दिया और जोर से चिंघाड़ मारी। आवाज सुनकर शिकारी उठ बैठे। पर जैसे ही उन्होंने सामने का दृश्य देखा उनकी हालत खराब हो गयी। फिर भी किसी तरह से उन लोगों ने अपनी हिम्मत जुटायी और जंगल के बाहरी सिरे की ओर भाग खड़े हुए। तभी चाँद पुनः निकल आया। जानवरों ने काफी दूर तक उन्हें खदेड़ दिया। शिकारी सिर पर पैर रखकर वहाँ से ऐसे भागे कि फिर उन्होंने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। अपनी जान बच जाने के कारण उन सभी ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और प्रण किया वे फिर कभी किसी जानवर का शिकार न करेंगे।

शिकारियों को भगाकर जानवर पुनः जंगल में लौट आए। वे बहुत खुश थे। वे सब अपनी विजय पर उत्सव मनाने लगे। सुबह होने तक जंगल के कोने-कोने में एक ही आवाज गूँजती रही, हम एक हैं।

कविता : डॉ. पी.आर. शुक्ल

धरती



ऊँची धरती नीची धरती।
नीली लाल गुलाबी धरती।
हरे भरे वृक्षों से सज्जित,
मस्ती में लहराती धरती।

कल-कल नीर बहाती धरती,
शीतल पवन चलाती धरती।
कभी जा चढ़े शैल शिखर तो,
कभी सिन्धु खा जाती धरती।

अच्छी-अच्छी फसलें देकर,
मानव को हुलसाती धरती।
हीरा पन्ना मोती माणिक,
जैसे रतन लुटाती धरती।



भेद न करती ऊँच नीच का,
सबका बोझ उठाती धरती।
अंतकाल में हर प्राणी को,
मीठी नींद सुलाती धरती।

जाति धर्म से ऊपर उठ कर,
सबको गले लगाती धरती।
रहो प्रेम से इस धरती पर,
हमको सबक सिखाती धरती।

डॉ. अंकल के उत्तर

□ डॉ. कुन्दन कुमार

—राजकुमार (सकलडीहा)

प्रश्न : डॉ. अंकल, मेरी उम्र लगभग 20 वर्ष है। जब मै रात को पढ़ता हूँ तो मेरी आँखों से पानी आता है तथा धुंधला दिखने लगता है और बार-बार कोशिश करने पर भी मैं पढ़ नहीं सकता। कृपया कोई उपाय बताएँ?

उत्तर : अपनी आँखें नेत्र चिकित्सक से टैस्ट करवायें। शुद्ध शहद की एक-दो बूँद सुबह-शाम आँखों में डालें। लाभ होगा।

—अंजु (सीलमपुर), महावीर प्रसाद (मालकसर) मोटी (मलेर कोटला)

प्रश्न : मेरे दाँत पीले हैं। कृपया कोई ऐसा उपाय बताएं जिससे दाँत बिल्कुल चमक जाएँ।

उत्तर : फिटकरी तवे पर फूला लें। सेंधा नमक व लकड़ी का जला कोयला तीनों बराबर भाग लेकर बारीक कूटपीस कर शीशी में भरकर रख लें। सुबह - शाम मंजन की तरह प्रयोग करें लाभ होगा।

—रवि (राऊरकेला)

प्रश्न : दिमाग को एकाग्र करने का कोई उपाय बताने की कृपा करें?

उत्तर : ब्राह्मी-वटी सुबह-शाम लें।

—धीरज कुमार (बहादुरगढ़)

प्रश्न : डॉ. अंकल मेरी उम्र 17 वर्ष है। कुछ दिन पहले मुझे 'चिकन पोक्स' हो गया था। ठीक होने के बाद भी मेरे मुँह पर कई जगह गड्ढे और निशान पड़ गये हैं।

उत्तर : मुलतानी मिट्टी, सफेद चंदन व हाथी की लीद बराबर भाग लेकर कूटपीस कर रख लें। एक चम्मच रात को पानी में भिगोकर सुबह उबटन की तरह मलें शीघ्र लाभ होगा।

—चन्द्रशेखर मेहता (रतिया-हिसार)

प्रश्न : मुझे गर्मियों में नकसीर बहुत आती है। कृपया कोई ईलाज बताएँ?

उत्तर : चीनी के शर्बत की दो-चार बूँद सुबह-शाम नाक में डालें। लाभ होगा।

—रवि कुमार राहुल (कस्बा बराड़ा)

प्रश्न : मुझे बीड़ी पीने की काफी दिनों से आदत है। मैं बीड़ी छोड़ना चाहता हूँ। कृपया कोई उपाय बतायें?

उत्तर : बड़ी इलायची, छोटी इलायची, पोदिना, मिश्री, सौंफ, मुलहठी बराबर भाग लेकर पीस लें। जब बीड़ी पीने की इच्छा हो तो इसे चूसें। लाभ होगा।

कभी न भूलो

संग्रहकर्ता : सुरेश खुराना 'पप्पी' (जीन्द), जतिन सपड़ा (दिल्ली)

- यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहता है तो उसकी प्रत्येक भूल कुछ न कुछ सिखा देती है।
- अपवित्र कल्पना भी उतनी ही बुरी होती है जितना बुरा अपवित्र कर्म।
- संकट के समय धैर्य धारण करना ही मानो आधी लड़ाई जीत लेना है।
- जिन्दगी में सबसे बड़ा राजदार व वफादार एक सच्चा दोस्त ही होता है।
- भूल करना पाप नहीं, मनुष्य का लक्षण है मगर भूल करके उसे न सुधारना सबसे बड़ा दोष है।
- ईमानदार आदमी ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है।
- नफरत दिल का दीवानापन है।
- आनंद ही आत्मा का स्वरूप है।
- अज्ञान जैसा दूसरा शत्रु नहीं।
- टूट जाओ पर अन्याय के आगे मत झुको।
- आशा उत्साह की जननी है। आशा में बल है तेज है।
- अगर सम्मान चाहते हो तो पहले सम्मान करना सीखो।
- गुरू बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना भक्ति नहीं, भक्ति बिना मुक्ति नहीं।
- अंधकार मृत्यु है, प्रकाश अमृत है।
- सब दानों में ज्ञान का दान ही सर्वश्रेष्ठ है।
- फूल चुनने के लिए ठहरो मत, आगे बढ़ो। तुम्हारी राह में निरन्तर फूल खिलते रहेंगे।
- स्पष्टवादिता से बहुधा ठेस लगती है, किन्तु यह प्रायः हमेशा ही वांछनीय है, विशेषकर उनके बीच जिनके साथ काम करना होता है।
- कुल्हाड़ी से कटा हुआ वृक्ष फलने-फूलने लगता है मगर मनुष्य के शब्दों से कटा हुआ मन शायद ही कभी फलता-फूलता है।

पढ़ो और हँसो

दो पागल पागलखाने के कम्पाउण्ड में घूम रहे थे। उनको एक कुत्ता दिखाई दिया। एक पागल उसके पास पहुँचा और अदब से झुककर कहा—आदाब अर्ज करता हूँ, हाथी साहब!

दूसरे ने कहा—अरे यह हाथी है?

पहले ने जवाब दिया—मुझे भी मालूम है कि यह घोड़ा है। मैं तो यूँ ही मजाक कर रहा हूँ।

❖ ❖ ❖

नौकरी का एक उम्मीदवार फार्म भर रहा था। फार्म पर लिखा था—क्या तुम गिरफ्तार हुए हो?

उसके सामने उसने लिखा—नहीं।

उसके बाद वाले कालम में लिखा था—क्यूँ?

उसने उत्तर में लिखा—क्योंकि कभी पकड़ा न जा सका।

— सरिता चौधरी (दिल्ली)

❖ ❖ ❖

एक होटल के मालिक ने सुबह सब बैरों को बुलाकर आदेश दिया—आज सब ग्राहकों का अच्छी तरह स्वागत करो; मुस्कुरा कर पेश आओ; पंखों को उनकी तरफ घुमा दो, ठण्डा पानी पिलाओ।

एक बैरे ने प्रश्न किया—साहब आज कोई विशेष अतिथि आने वाला है क्या?

मालिक—नहीं, आज चावल जरा जल गये हैं।

— वन्दना, आशीष (दिल्ली)

❖ ❖ ❖

सदर बाजार की दुकान पर बोर्ड लगा था—मामा जी की दुकान, यहाँ पर शादी की हर चीज मिलती है।

एक नौजवान आया और बोला—मुझे शादी के लिए एक अच्छी सी दुल्हन दिखाओ।

— विकास बंसल 'विक्की' (चौटाला)

राजेश—कल मैं जंगल से गुजर रहा था कि एक शेर मिल गया।

तरवर—फिर तुमने क्या किया?

राजेश—मैंने उसकी पूँछ मरोड़ी उसके पाँव को खींचकर पटका, उसकी आँख में उंगली डाली और उसका जबड़ा पकड़कर खोला।

तरवर—(आश्चर्य से) तुमने इतना सब किया? बहुत बहादुर हो तुम!

राजेश—और नहीं तो क्या! मैंने उससे यह भी कहा कि अगर तुम जीवित होते तो तुम्हारा इससे भी बुरा हाल करता।

❖ ❖ ❖

एक चोर तेजी से दौड़ता हुआ गली के मोड़ पर खड़े सिपाही से टकरा गया सिपाही ने उसे डाँटते हुए कहा—कौन हो?

पहले तो चोर घबराया फिर भागते हुए बोला—चोर।

सिपाही उसे भागते हुए देखकर हँसकर बोला—अजीब पागल आदमी है पुलिस से मजाक करता है।

— ओमसिंह पंवार (भीम ब्यावर)

❖ ❖ ❖

मालकिन : (नौकर को डांटते हुए) तुम्हें कितनी बार मना किया है कि तुम साजनमल की दुकान पर मत जाया करो। वह आँखों में धूल झोंककर सामान तोलता है।

नौकर : मालकिन धूल कैसे झोंकेगा, जब साजन सामान तोलता है तो मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ।

— परेश गुप्ता (इटावा)

सुषमा : तुम मेरी बेटी की शादी में रेलगाड़ी में आओगी या हवाई जहाज से?

राधा : तुम जिसका भी टिकट भेजोगी मैं उसी से आ जाऊँगी।

— सुधीर निरंकारी (वडसा)

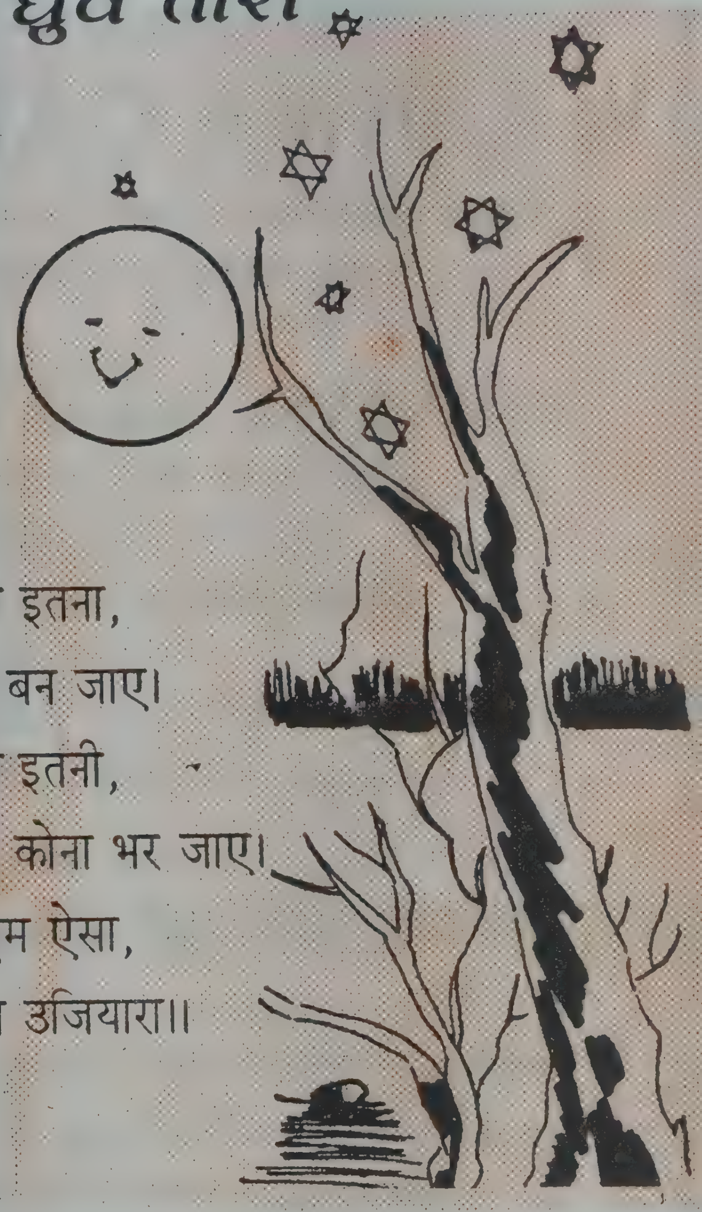
दीपक : (आशा से) बताओ भालू के बाल लम्बे क्यों होते हैं?

आशा : इसलिए कि जंगल में कोई नाई नहीं होता।

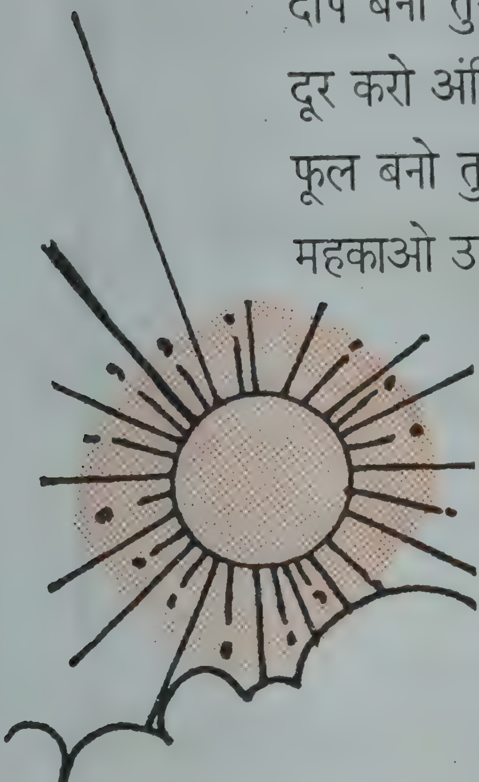
— कु. आशा (जामुल)

गीत : डॉ. दयानाथ सिंह 'शरद'

बन जाओ ध्रुव तारा



दीप बनो तुम ऐसा,
दूर करो अंधियारा।
फूल बनो तुम ऐसा,
महकाओ उपवन सारा।।



करो परिश्रम इतना,
मिट्टी सोना बन जाए।
हँसी बिखेरो इतनी,
मन का हर कोना भर जाए।
सूर्य बनो तुम ऐसा,
कर दो जग उजियारा।।



तन को बना लो ऐसा,
जो सर्दी, वर्षा, धूप सहे।
मन को बना लो ऐसा,
टेक न छोड़े जो बात कहे।
चाँद बनो तुम ऐसा,
कर दो शीतल मन सारा।
संकल्प करो कुछ ऐसा,
बन जाओ ध्रुव तारा।।

आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया का अक्टूबर अंक पढ़ा। हमारे दादा जी (निर्मल जोशी) शारीरिक रूप में हमारे बीच नहीं रहे, पढ़कर एक बहुत बड़ा झटका लगा। हमारे प्रणेता; हमारे मार्गदर्शक, मन की दुविधाओं के निवारक अब कैसे मिलेगें। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं हो पायेगी क्योंकि ऐसी शक्ति कई सौ वर्षों के बाद जन्म लेती है। भगवान हम सब को इस झटके को सहने की ताकत दे।

— ऐसी ही श्रद्धांजलियों वाले देश-विदेशों से अब तक कई हजार पत्र आ चुके हैं व अब भी आ रहे हैं। इसलिये उन सब के नाम प्रकाशित कर पाना सम्भव नहीं है। हाँ, इतना पता चल रहा है कि दादा जी इन सभी के मन में अब भी समाये हुए हैं। — सम्पादक

हम हँसती दुनिया के पिछले तीन वर्षो से ग्राहक हैं। इसकी समस्त सामग्री हमें उपयोगी एवं व्यवहारिक लग रही है। इसीलिये परिवार का हर सदस्य इसका दिवाना हो गया है। बच्चा, नौजवान व बूढ़े सभी इसे चाव से पढ़ते हैं।

— प्रदीप कुमार सचदेवा (मोगा)

सितम्बर अंक में डॉ. पुष्पा तिवारी की रचना 'स्वतन्त्रता का मूल्य', व जाकिर अली की रचना 'धोखा नहीं दूँगा' बहुत अच्छी लगी।
— नगिन्दर सिंह (लुधियाना) सचिन राम चन्द्र लौहार (कीर्ति नगर, नई दिल्ली)

हँसती दुनिया की हर कहानी कोई न कोई सन्देश अवश्य देती है। इसीलिये हम सबको यह बहुत पसन्द है। मेरा भाई अभी छोटा है स्वयं पढ़ नहीं सकता मगर चित्रों को देखकर कहता है कि मुझे यह सब पढ़ कर सुनाओं। बहुत अच्छा लगता है। हमारी हँसती दुनिया घर-घर की रौनक हो, ऐसी हमारी कामना है।
— वरुण वधवा, प्रिन्स वधवा (सरिता विहार, नई दिल्ली) कोमल छाबड़ा (अलवर) अर्चना, वन्दना (पालम)

कथा पुराणों से (शिखा जोशी) हमें सबसे अच्थी लगती है। शेष सामग्री भी बहुत अच्छी होती है। इस समय मेरी कक्षा के 20 बच्चे तो इसके सदस्य ही हो गये हैं। उपहार में इससे अच्छी पुस्तक नहीं दी जा सकती।

— अनीता अनु, रामनरेश विश्वकर्मा, मालती सद्दल (जान्धर कैण्ट) दीपक चन्दानी, जोटूमल बजारी मल्ल (पचचोरी, मुंबई), रेखा निरंकारी (कोल्हापुर), भारती मेहरबान बालाघाट। संजय बबलानी (जयपुर),

अक्तूबर अंक मिला। मैं हँसती दुनिया की पुरानी पाठिका हूँ। यह जानकर बहुत दुख हुआ कि हमारे दादा जी अब नहीं रहे। पत्रिका में खासतौर पर मुझे दादा के उत्तर पसन्द था। बाकी और भी स्तम्भ कभी न भूलो व पढ़ो और हँसो भी अच्छे लगते हैं।

— आशा कुकरेजा (डोढाईंचा)

(पृष्ठ 67 का शेष)

—नहीं, शरबती ने उसे घुड़क दिया, वह जलील जिंदगी है। तुम मंडी जा के कच्चा सामान ले आया करना। उससे तुम झाड़ू बनाया करना। इसकी खूब ब्रिकी होती है।

—लेकिन मुझे तो ... सुखराम सिर खुजलाने लगा।

—कोई महतारी के पेट से सीख के तो नहीं आता है न।

—तो?

—अरे, रमिया के बापू के पास जा के सीख लो न।— शरबती बोली दो ही दिन में सब कुछ सीख जाओगे।

—ठीक है। —सुखराम पत्नी की बात मान गया।

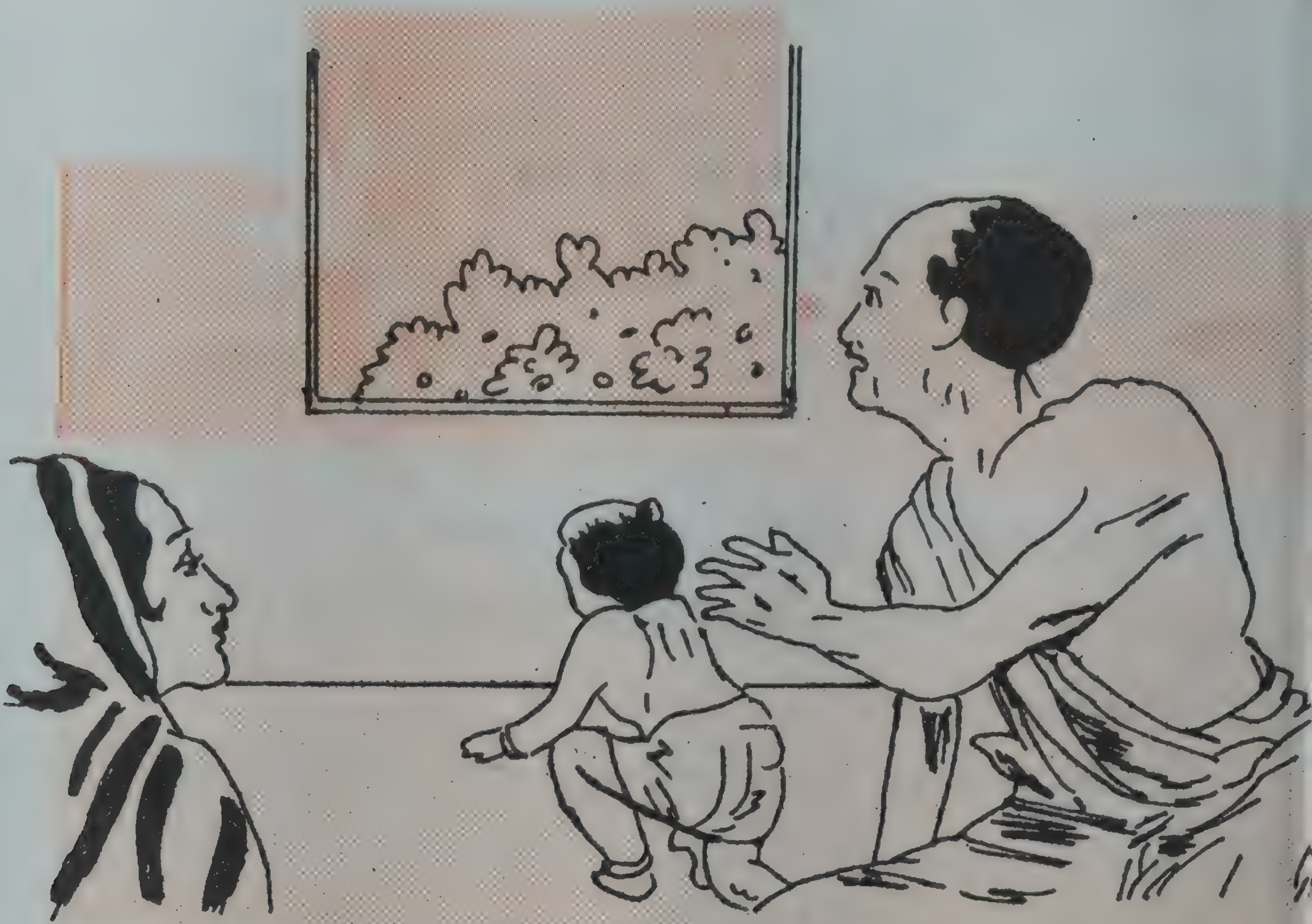


दूसरे दिन बस्ती का गोपाल सुखराम को भी अपने साथ मंडी ले गया। वहाँ एक ओर घास की ढेरी पड़ी थी। उन दोनों ने घास खरीदी और पैदल ही घर की राह हो लिए।

—ये घास तो बहुत ही सस्ती मिला करती है। —राह चलते सुखराम ने कहा।

— हाँ तो, ये मिट्टी के मोल मिला करती है। गोपाल बोला। जब यह झाड़ू की शक्ल पाता है तो बहुत कीमती हो जाता है।

शरबती सड़क के किनारे पटरी पर दूसरी औरतों के साथ सब्जी बेचने लगी। उधर सुखराम भी सारे दिन झुग्गी में बैठा हुआ झाड़ू बनाने लगा। उन्हें वह स्थानीय दुकानदारों को बेच आता। दो-चार दिन में ही वे दोनों अच्छी कमाई करने लगे।



उस दिन वे दोनों सुबह की चाय पी रहे थे। सुखराम ने कंधे उचका कर क
अब तो हमारे बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़ा करेंगे।

—लो देखने लगे न अभी से सपने?— शरबती मुस्कुरा दी।

—सपनों को देखना कितना अच्छा लगता है। —सुखराम बोला।

—हाँ तो—शरबती बोली— उन तक पहुँचना और भी अच्छा लगता है।

इस पर सुखराम हँस दिया। शरबती ने भी उसका साथ दिया। दोनों के चेहरों
संतोष टपक रहा था। तभी अंदर झुग्गी में उनकी बिटिया के रोने का स्वर सुनाई दि
शरबती अंदर चली गई। वह उसे थपथपाकर सुलाने लगी। सुखराम को लगने ल
जैसे कि जल्द ही वे अपने सपनों को अपनी मुट्ठी में भर लेंगे। ●

दादा जी ने कहा—

सबसे अधिक धनी वह नहीं जिसके पास अपार धन है बल्कि जिसने किसी
कोई ऋण नहीं देना वही धनी है। साथ ही यह भी सदा याद रखें कि — 'सन्तो
धन ऋणी के पास हो ही नहीं सकता।

सुन्दर कर्मों के फल को अपना धन बनाये रखने वाले लोग कभी भिखारी न
हो सकते क्योंकि उनके धन को चोर चुरा नहीं सकेगा उलटा कोई चुराने आयेगा
उनका मन-मस्तिष्क भी रोशन हो जायेगा


FOR
WEDDING
SAREES
SUIT
DUPATTAS
AND
LEHNGA
CHUNNIS

Registered with the Registrar of Newspaper
For India under RNI No. 25673/73

Delhi Postal Regd No. DL-1119



Licence No. U(DN) 23/2000
Licenced to Post
Without pre-payment

Posted sat N.D. P.S.O.
Prescribed dates 21st